श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ़-३६४२५० (सौराष्ट्र)

भगवान श्री कुन्दकुन्द-कहान जैन शास्त्रमाला, पुष्प–२३६

ॐ

श्री
वर्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा

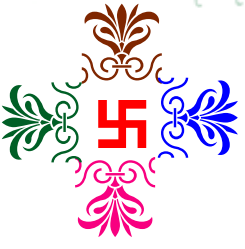

-: प्रकाशक :-

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ-३६४२५०

प्रथम आवृत्ति प्रत : ३००० वि. सं. २०६९ ई.स. २०१३

श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा(हिन्दी)के

❊ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ❊

अरूणाबेन नरेशभाई शाह,
अपर्णा हर्ष शाह, अमदावाद

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. 27=00 है। मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. 20=00 रखी गई है।

मूल्य : रु. 20=00

मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
सोनगढ-३६४२५०

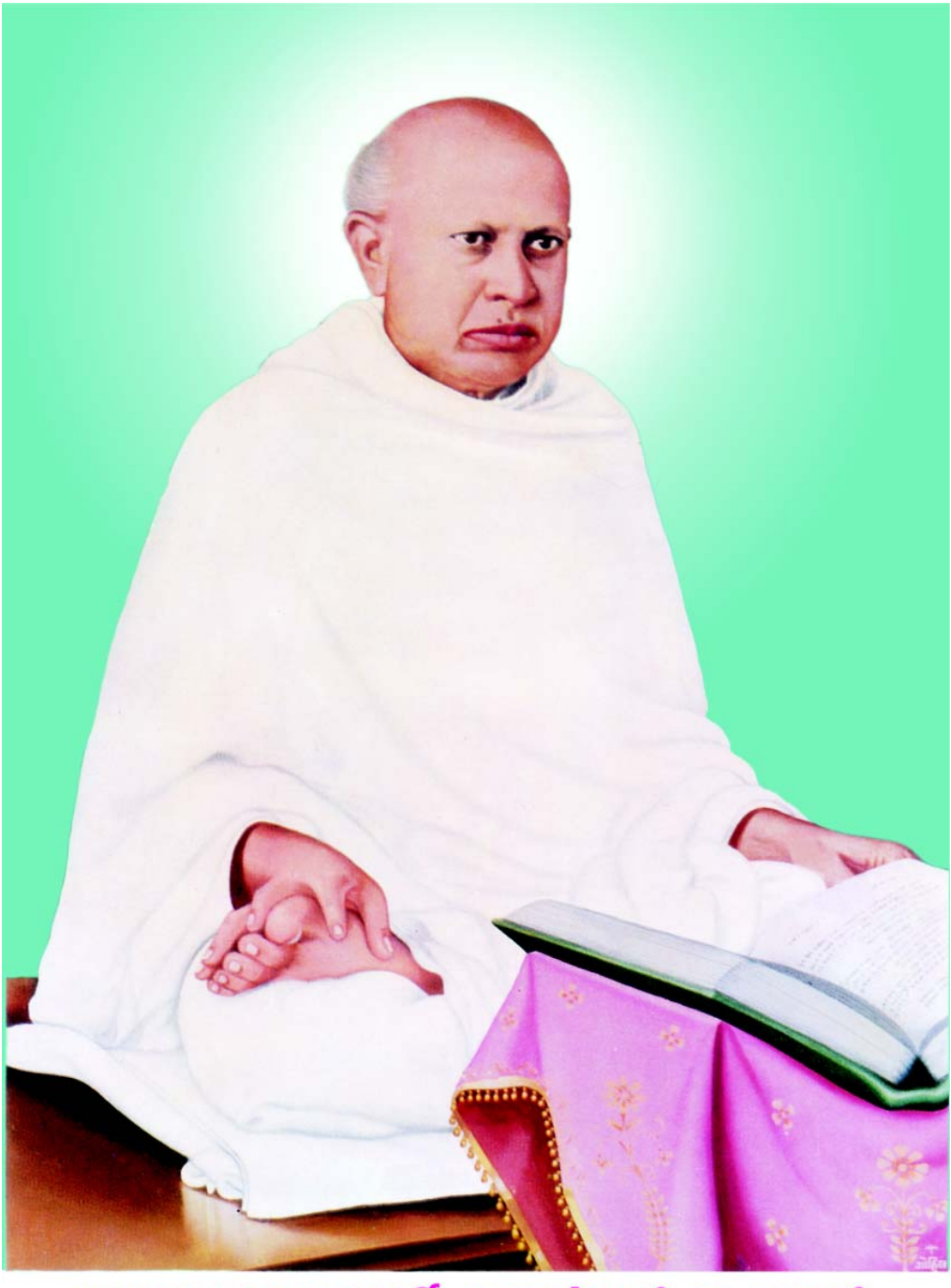

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैनधर्म ही सनातन सत्य है' ऐसा युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्धस्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ आपके परम प्रतापसे इस कालमें सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सच्ची पहचान देकर मुमुक्षु समाज पर अनन्त उपकार किये हैं। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि (सोल्लास) प्रवृत्ति नियमित चल रही है। स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। आपके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमंदिर एवं वीतराग जिनबिम्बोंसे भर गया।

आपके परम प्रतापसे ही सुवर्णपुरी (सोनगढ़) भव्य विशाल जिनमंदिर एवं भाववाही जिनबिम्बोंसे शोभित हो गई है। इतना ही नहीं आपके प्रतापसे सुवर्णपुरी एक स्वानुभव तीर्थ तो बन गया है, एवं यहाँ पर ''तू परमात्मा है' का नाद निरन्तर गूँजता रहता है' ऐसा वातावरण सहज ही बन गया है। साथमें देव-शास्त्र-गुरुके–गुण गुँजारवसे निरन्तर सुवर्णपुरी गूँजती रहती है जिससे यह 'स्वर्णपुरी तीर्थ अध्यात्म-तत्त्वज्ञानके साथ-साथ (जिनायतन-जिनबिम्ब) मंडल विधान पूजारूप गुँजारवोंमय बन गया है।

साथ साथ प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीने भी पूज्य गुरुदेवश्रीकी भवनाशिनी वाणीका हार्द मुमुक्षु समाजको बताकर, मुमुक्षुओंके अंतरको जागृत किया है तदुपरांत सच्चे देव-शास्त्र-गुरुके प्रतिके भक्तिभाव सह भक्ति-पूजाकी अनेकविध रोचक गति-विधियों द्वारा नवपल्लवित किया है।

जिसके फलस्वरूप सुवर्णपुरीमें देव-शास्त्र-गुरुकी भक्ति–पूजनके विविध कार्यक्रमका आयोजन सदैव चलता रहता है। इस हेतुको ध्यानमें रखकर ट्रस्टकी ओरसे विविध पुस्तकोंका भी प्रकाशन हो रहा है।

सुवर्णपुरीके विविध उत्सव, पूजा-भक्ति व पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा दिये गये तत्त्व-अभ्यासके विशेष अनुष्ठान सह मनाये जाते हैं। पूज्य बहिनश्री चंपाबेनके मुमुक्षु समाज पर अनेकविध उपकारोंको हृदयगत कर, श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्टने उनका मंगलकारी जन्मशताब्दी महोत्सव अष्टाह्निक महोत्सवके रूपमें मनानेका निर्णय किया है। उसके अंतर्गत पूज्य बहिनश्रीके अंतरमें वर्तती जिनेनद्रभक्तिको लक्ष्यगत कर उनकी भक्ति-भावनाके अनुरूप इस प्रसंग पर ''श्री वर्तमान चतुर्विंशति पूजन विधान''का आयोजन किया गया है। अतः उस हेतु कविवर वृंदावनदासजी रचित यह भाववाही पूजन विधानका नूतन प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पुस्तकके प्रकाशनमें सहयोग देनेवाले सभी मुमुक्षुओंके हम आभारी है। आशा है कि यह नूतन संस्करणसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

पूज्य बहिनश्री चंपाबेनकी
जन्म शताब्दी महोत्सव
दि. : 15-8-2013

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि0 जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,
सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

नामावली स्तोत्र ---------- 1
श्री समुच्चयचतुर्विंशति जिनपूजा ---------- 3
श्री आदिनाथ जिनपूजा ---------- 6
श्री अजितनाथ जिनपूजा ---------- 10
श्री संभवनाथ जिनपूजा ---------- 15
श्री अभिनन्दननाथ जिनपूजा ---------- 20
श्री सुमतिनाथ जिनपूजा ---------- 25
श्री पद्मप्रभ जिनपूजा ---------- 30
श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा ---------- 35
श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा ---------- 41
श्री पुष्पदन्त जिनपूजा ---------- 46
श्री शीतलनाथ जिनपूजा ---------- 50
श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा ---------- 55
श्री वासुपूज्य जिनपूजा ---------- 60
श्री विमलनाथ जिनपूजा ---------- 65
श्री अनन्तनाथ जिनपूजा ---------- 70
श्री धर्मनाथ जिनपूजा ---------- 75
श्री शान्तिनाथ जिनपूजा ---------- 80
श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा ---------- 85
श्री अरनाथ जिनपूजा ---------- 90
श्री मल्लिनाथ जिनपूजा ---------- 95

श्री मुनिसुव्रत जिनपूजा ---------- 100
श्री नमिनाथ जिनपूजा ---------- 105
श्री नेमिनाथ जिनपूजा ---------- 109
श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा ---------- 114
श्री वर्द्धमान जिनपूजा ---------- 119
श्री समुच्चय अर्घ ---------- 124
श्री धातकी-विदेह-भावी जिनवर पूजा ---------- 125
भावी मुख्य गणधर पूजा ---------- 129
स्वर्णपुरी तीर्थ पूजा ---------- 133
अर्घावली ---------- 137
समुच्चय अर्घ ---------- 139
आरती ---------- 140
शान्तिपाठ ---------- 143

जिनदर्शन आदि छह कार्य श्रावकके प्रतिदिन होते हैं। यहाँ सम्यग्दर्शन सहित श्रावककी मुख्य बात है; सम्यग्दर्शनके पूर्व जिज्ञासु भूमिकामें भी गृहस्थों द्वारा जिनदर्शन-पूजा-स्वाध्याय आदि कार्य होते हैं। जो सच्चे देव-गुरु-शास्त्रको नहीं पहचाने, उनकी उपासना नहीं करे, वह तो व्यवहारसे भी श्रावक नहीं कहलाता।

–पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

ॐ

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

वर्तमानचतुर्विंशति जिनपूजा

(दोहा)

वंदौ पांचौं परमगुरु, सुरगुरु बंदत जास।
विघनहरण मंगलकरन, पूरण परम प्रकाश॥१॥

चोबीसौं जिनपति नमौं, नमौं शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचौं पाठ सुखदाय॥२॥

नामावली स्तोत्र

(छन्द नयनमालिनी, तथा तामरस व चण्डी–१६ मात्रा)

जय जिनन्द सुखकन्द नमस्ते। जय जिनन्द जितफन्द नमस्ते॥
जय जिनन्द वरबोध नमस्ते। जय जिनन्द जितक्रोध नमस्ते॥१॥

पाप-ताप-हर-इन्दु नमस्ते। अर्ह-वर्ण-जुतबिंदु नमस्ते॥
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते। इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते॥२॥

पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते। मर्म भर्म–घन धर्म नमस्ते॥
दृग्विशाल वरभाल नमस्ते। हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते॥३॥

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते। ऋद्धि-सिद्धि-वरवृद्धि नमस्ते॥
वीतराग विज्ञान नमस्ते। चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते॥४॥

स्वच्छ गुणांबुधि रत्न नमस्ते। सत्त्वहितंकरयत्न नमस्ते॥
कुनय-करी मृगराज नमस्ते। मिथ्या-खग-वर-बाज नमस्ते॥५॥

भव्य भवोदधितार नमस्ते। शर्मामृतसितसार नमस्ते॥
दर्श–ज्ञान–सुख–वीर्य नमस्ते। चतुरानन धरधीर्य नमस्ते॥६॥

हरि हर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते। मोहमर्दमनु जिष्णु नमस्ते॥
महादान महभोग नमस्ते। महाज्ञान महजोग नमस्ते॥७॥

महा उग्र तप–शूर नमस्ते। महामौन गुणभूरि नमस्ते॥
धर्मचक्रि वृषकेतु नमस्ते। भव-समुद्र-शत-सेतु नमस्ते॥८॥

विद्याईश मुनीश नमस्ते। इन्द्रादिक-नुत शीश नमस्ते॥
जय रत्नत्रय राय नमस्ते। सकल जीव सुखदाय नमस्ते॥९॥

अशरण शरण–सहाय नमस्ते। भव्य सुपंथ लगाय नमस्ते॥
निराकार साकार नमस्ते।। एकानेक–अधार नमस्ते॥१०॥

लोकालोक विलोक नमस्ते। त्रिधा सर्व गुणथोक नमस्ते॥
सल्ल-दल्ल-दल-मल्ल नमस्ते। कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते॥११॥

भुक्तिमुक्ति-दातार नमस्ते।। उक्तिसुक्ति श्रृंगार नमस्ते॥
गुण अनन्त भगवंत नमस्ते। जय जय जय जयवंत नमस्ते॥१२॥

श्री समुच्चयचतुर्विंशति जिनपूजा

(छन्द कवित्त)

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द पहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजित-सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्वल, शांति कुन्थु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमानपद पुष्प चढ़ाय॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्।

(अष्टक)

(चाल : द्यानतरायकृत नंदीश्वरदीपाष्टककी तथा
गरवा राग आदि अनेक चालोंमें)

मुनिमनसम उज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनककटोरी धीर, दीनो धार धरा।
चौबीसौं श्रीजिनचन्द, आनन्दकन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशररंग भरी।
जिनचरणन देत चढ़ाय, भव-आताप-हरी॥चौ०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे।
मुक्ताफलकी उनमान, पुंज धरौं प्यारे॥चौ०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगन्ध भरे।
जिन अग्र धरो गुनमंड, कामकलंक हरे॥
चौबीसौं श्रीजिनचन्द, आनन्दकन्द सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मनमोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने॥चौ०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम-खंडन दीप जगाय, धारों तुम आगै।
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै॥चौ०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हों॥चौ०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायौ।
देखत दृग-मनको प्यार, पूजत सुख पायौ॥चौ०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपौं भवतार, भवतरि मोक्ष वरों॥चौ०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हितहेत।
गावों गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत॥१॥

(धत्ता)

जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक, चौबीसों जिनराज वरा॥२॥

(पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत। जय अजित जीतवसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर। जय अभिनंदन आनंदपूर॥३॥

जय सुमति सुमति दायक दयाल। जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल।
जय जय सुपास भवपास–नाश। जय चंदचंदतनदुतिप्रकाश॥४॥

जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत। जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ञ। जय वासवपूजित वासुपुज्ञ॥५॥

जय विमल विमलपद–देनहार। जय जय अनंत गुणगण अपार।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत। जय शांति शांति पुष्टी करेत॥६॥

जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय। जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय।
जय मल्लिमल्ल हतमोहमल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रतसल्लदल्ल॥७॥

जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ॥८॥

(धत्ता)

चौबीस जिनंदा आनन्दकन्दा, पापनिकंदा सुखकारी।
तिनपद जुगचन्दा उदय अमंदा, वासववंदा हितधारी॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भुक्तिमुक्तिदातार, चौबीसौं जिनराज वर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै॥१०॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री समुच्चयचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता॥१॥

श्री आदिनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(अडिल्ल)

परम पूज्य भृषभेश स्वयंभू देवजू।
पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेवजू।
कनकवरण तन तुंग धनुष पनशत तनों।
कृपासिन्धु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : द्रुतविम्बलित तथा सुन्दरी)

हिमवनोद्भव–वारि सुधारिकै। जजहौं गुनबोध उचारिकैं॥
परमभाव सुखोदधि दीजिए। जनम-मृत्यु-जरा क्षय कीजिये॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय चन्दन दाह निकंदनं। घसि उभै करमें करि वंदनं॥
जजत हौं प्रशमाश्रम दीजिये। तपत ताप त्रिधा क्षय कीजिये॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल तंदुल खंडविवर्जितं। सित निशेष-हिमामियतर्जितं॥
जजत हौ तसु पुंज धरायजी। अखय संपति द्यो जिनरायजी॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चंपक केतकी लीजिये। मदन-भंजन भेट धरीजिये॥
परमशील महा सुखदाय हैं। समदसूल निमूल नशाय हैं॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदनमोदक लीजिये। हरनभूख जिनेश जजीजिये।।
सकल आकुल–अंतक–हेतु हैं। अतुल शांतसुधारस देतु हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निविड मोह महातम छाइयो। स्वपरभेद न मोहि लखाइयो।।
हरनकारन दीपक तासके। जजत हों पद केवल भासके।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर चंदन आदिक लेयकें। परम पावन गंध सुखेयके।।
अगनिसंग जरैं मिस धूमके। सकल कर्म उडै यह घूमके।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस पक्व मनोहर पावने। विविध ले फल पूज रचावने।।
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये। हमहिं मोक्ष महाफल दीजिये।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादि समस्त मिलायकैं। जज हौं पद मंगल गायकैं।।
भगत वत्सल दीन दयालजी। करहु मोहि सुखी लखि हालजी।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(छन्द : द्रुतविलंबित तथा सुंदरी)

असित दोज अषाढ़ सुहावनी। गरभमंगल को दिन पावनी।।
हरि-शची पितृ-माता हि सेवही। जज हैं हम श्रीजिनदेवही।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

असित चैत सुनौमि सुहाइयो। जनममंगल ता दिन पाइयो।।
हरि महागिरिपै जजियो तवै। हम जजैं पदपंकजको अबै।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

असित नौमि सुचैत धरे सही। तपविशुद्ध सबै समता गही॥
निजसुधारससों भर लाइयो। हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

असित फागुन ग्यारसि सोहनों। परम केवलज्ञान जग्यो भनों॥
हरि समूह जजैं तहँ आइकैं। हम जजैं इत मंगल गाइकैं॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णेकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

असित चौदसि माघ विराजई। परम मोक्ष सुमंगल साजई॥
हरि-समूह जजैं कैलाशजी। हम जजैं अति धार हुलासजी॥५॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(धत्ता)

जय जय जिनचंदा, आदिजिनन्दा, हनि भवफंदा–कंदा जू।
वासव–शत–वंदा, धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू॥१॥

(छन्द : मोतियादाम)

त्रिलोकहितंकर पूरन पर्म। प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म॥
जतीसुर ब्रह्मविदाम्बर बुद्ध। वृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध॥२॥

जबै गर्भागम–मंगल जान। तबै हरि हर्ष हिये अति आन॥
पिता जननीपद–सेव करेय। अनेक प्रकार उमंग भरेय॥३॥

जये जब ही तब ही हरि आय। गिरींद्रविषै किय न्हौन सुजाय॥
नियोग समस्त किये तित सार। सुलाय प्रभु पुनि राज-अगार॥४॥

पिता-कर सोंपि किया तित नाट। अमंद अनंद समेत विराट॥
सुथान पयान कियो फिर इन्द। जहाँ सुरसेव करैं जिनचन्द॥५॥

कियो चिरकाल सुखाश्रित राज। प्रजा सब आनन्दको नित साज॥
सुलिप्त सुभोगनिमें लखि जोग। कियो हरि ने यह उत्तम योग॥६॥

निलाञ्जन नाच रच्यो तुम पास। नवों रसपूरित भाव विलास।।
बजै मिरदंग द्रमं द्रम जोर। चले पग झारि झनांझन जोर।।७।।

घनाघन घंट करै धुनि मिष्ट। बजे मुहचंग सुरान्वित पुष्ट।।
खड़ी छिन पास छिनहि आकाश। लघु छिन दीरघ आदि विलास।।८।।

ततच्छन ताहि विलै अविलोय। भये भवतैं भवतीत बहोय।।
सुभावत भावन बारह भाय। तहाँ दिवब्रह्म–ऋषीश्वर आय।।९।।

प्रबोध प्रभु सु गये निज धाम। तबै हरि आय रची शिवकाम।।
कियो कचलौंच पिराग अरन्य। चतुर्थम ज्ञान लह्यो जगधन्य।।१०।।

धरयो तब योग छह मास प्रमान। दियो श्रेयांस तिन्हैं इखदान।।
भयो जब केवलज्ञान जिनेन्द्र। समोसृत ठाठ रच्यो सु धनेंद्र।।११।।

तहाँ वृषतत्त्व प्रकाशि अशेष। कियो फिर निर्भयथान प्रवेश।।
अनन्त गुणातम श्री सुखराश। तुमैं नित भव्य नमै शिवआश।।१२।।

(धत्ता)

यह अरज हमारी, सुनि त्रिपुरारी, जन्म-जरा-मृत दूर करो।।
शिवसंपत्ति दीजे, ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

जो ऋषभेश्वर पूजै, मनवचतनभाव शुद्ध कर प्रानी।।
सो पावे निश्चैसों, भक्ति औ मुक्ति सार सुखदानी।।१४।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

इति श्रीआदिनाथजिनपूजा समाप्त।।२।।

श्री अजितनाथ जिनपूजा

॥ स्थापना ॥

(छन्द : सवैया)

त्याग वैजयन्त सार, सारधर्म के अधार,
जन्माधार धीर नग्र सुष्टु कौशलापुरी।
अष्टदुष्ट नटाकार मातु वैजयाकुमार,
आयु पूर्व लक्ष दक्ष है बहत्तरै पुरी।
ते जिनेश श्रीमहेश शत्रुके निकँदनेश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी।
आय तिष्ठ इष्टदेव मैं करों पदाब्जसेव,
पर्मशर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(छन्द : त्रिभंगी)

गंगाहृद्पानी निर्मल आनी, सौरभसानी शीतानी।
तसु ढारत धारा, तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी॥
श्री अजितजिनेशं नुतशकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजो ख्याता जग्गेशं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि चन्दन बावन ताप-मिटावन, सौरभ पावन धसि ल्यायो।
तुम भवतमभञ्जन हो शिवरञ्जन, पूजारञ्जन मैं आयो॥२॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सितखण्डविवर्जित निशिपतितर्जित, पुञ्ज विधर्ज्जित तंदुलको।
भवभावनिखर्जित, शिवपदसर्जित, आनंदभर्जित दंदलको।
श्री अजितजिनेशं नुतशकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजो ख्याता जग्गेशं॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मनमथमदमन्थन धीरजग्रन्थन, ग्रन्थनिर्ग्रन्थन ग्रन्थपती।
तवपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती॥४॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो।
षटरसकरभीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुख पायो॥५॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकमणिमाला जोतिउजाला, भरि कनथाला हाथ लिया।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी, केवलधारी पूज किया॥६॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरादिकचूरं परिमलपूरं, खेवत क्रूरं कर्म जरैं।
दशहूँ दिशि धावत हर्ष बढ़ावत, अलिगुञ्जावत नृत्य करैं॥७॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम नारंगी श्रीफल चंगी, आदि अभंगीसौं अरचौं।
सब विघनविनाशै सुखपरकाशै, आतम भासै भौविरचौं॥८॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल सब सज्जै बाजत बज्जै, गुणगणरज्जै मनमज्जै।
तुव पदजुग मज्जै सज्जन जज्जै, ते भवभज्जै निजकज्जै॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद : तेवीसा)

जेठ असेत अमावशि सोहै। गर्भदिना नंद सो मनमोहै।
इन्द्र फनिंद्र जजै मनलाई। हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई॥१॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

माघसुदी दशमी दिन जायै। त्रिभुवन में अति हर्ष बढ़ाये॥
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई। हम सेवत हैं हुलसाई॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशमीदिने जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघसुदी दशमी तप धारा। भव तन भोग अनित्य विचारा॥
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई। हम इत सेवत हैं सिरनाई॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशमीदिने तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो। त्रिभुवनभानु सु केवल जायो॥
इन्द्र फनिन्द्र जजैं तित आई। हम पद पूजत प्रीत लगाई॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्थीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

पंचमि चैत सुदी निरवाना। निजगुणराज लियो भगवाना॥
इन्द्र फनिन्द्र जजै तित आई। हम पद पूजत हैं गुणगाई॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचमीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

अष्ट दुष्ट को नष्ट करि, इष्ट मिष्ट निज पाय।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय॥१॥

(छन्द : पद्धड़ी)

जय अजित देव तव गुण अपार। पै कहूँ कछुक लघु बुद्धि धार॥
दश जनमत अतिशय बलअनंत। शुभलच्छन मधुर वचन भनंत॥२॥

संहनन प्रथम मलरहित देह। तनसौरभ शोणितस्वेत जेह॥
वपु स्वेदविना महरूपधार। समचतुर धरें संठान चार॥३॥

देश केवल गमन अकाशदेव। सुरभिच्छ रहै योजन सुतेव॥
उपसर्गरहित जिनतन सु होय। सब जीव रहितबाधा सु जोय॥४॥

मुखचारि सर्वविद्याअधीश। कवलाअहारवर्जित गरीश॥
छायाविनु नख कच बढ़े नाहिं। उन्मेष टमक नहि भ्रकुटि नाहिं॥५॥

सुरकृत दशचार करौं बखान। सब जीव मित्रता भावजान॥
कंटकविन दर्पणवत सुभूमि। सब धान्य वृच्छ फल रहे झूमि॥६॥

षट्रितु के फूल फले निहार। दिशि निर्मल जिय आनन्दधार॥
जहं शीतल मंद सुगन्ध वाय। पदपंकजतल पंकज रचाय॥७॥

मलरहित गगन सुर जय उचार। वरषा गंधोदक होत सार॥
वर धर्मचक्र आगैं चलाय। वसुमंगलजुत यह सुर रचाय॥८॥

सिंहासन छत्र चमर सुहात। भामंडलछवि वरणी न जात॥
तरु उच्च अशोकतरु सुमनवृष्टि। धुनि दिव्य और दुंदुभी मिष्ट॥९॥

दृग ज्ञान शर्म बीरज अनन्त। गुण छियालीस इम तुम लहंत॥
इन आदि अनन्ते सुगुन धार। वरणत गणपति नहिं लहत पार॥१०॥

तव समवसरनमहँ इन्द्र आय। पद पूजत वसुविधि दरब लाय॥
अति भगतिसहित नाटक रचाय। ताथेइ थेइ थेइ ध्वनि रही छाय॥११॥

पग नूपुर झननन झनननाय। तननननननन तननन तान गाय॥
घननन नन नन घंटा घनाय। छम छम छम छम घुंघरू बजाय॥१२॥

दृम दृम दृम दृम मुरज ध्वान। संसाग्रदि सरंगि सुर भरत तान॥
झट झट झट अटपट नटत नाट। इत्यादि रच्यो अद्‌भुत सुठाट॥१३॥

पुनि बंदि इंद्र थुति थुति करंत। तुम हो जगमें जयवंत संत॥
फिर तुम विहार करि धर्मवृष्टि। तब जोग निरोध्यो परम इष्ट॥१४॥

सम्मेदथकी लिय मुक्ति थान। जय सिद्धशिरोमणि गुणनिधान॥
'वृंदावन' बंदत बारबार। भवसागर तें मो तार तार॥१५॥

(धत्ता)

जय अजित कृपाला, गुणमणिमाला, संजमशाला बोधपती॥
वर सुजसउजाला, हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : मँदालिप्त कपोल)

जो जन अजित जिनेश जजै हैं मनवचकाई।
ताकों होय आनन्द ज्ञानसम्पति सुखदाई॥
पुत्र मित्र धनधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै।
सकल शत्रु क्षय जाय अनुक्रमसो शिव पावै॥१७॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री अजितनाथ जिनपूजा समाप्त॥३॥

श्री संभवनाथ जिनपूजा

॥ स्थापना ॥

(छन्द : मदावलिप्त कपोल)

जय संभव जिनचन्द हरिगन चकोरनुत।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत॥
तजि ग्रीवक लिये जन्मनगर सावत्री आई।
सो भवभंजनहेत भक्त पर होहु सहाई॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : चौबोला)

मुनिमनसम उज्वल जल लेकर, कनक कटोरी में धारा।
जनम जरा मृतु नाश करनको, तुमपदतर डारों धारा॥
संभव जिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै।
निजनिधि ज्ञान–दरश सुख–वीरज, निरावाध भविजन पावै॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तपतदाह को कन्दन चन्दन, मलयागिरिको घसि लायो।
जगबन्धन–भौफन्दन–खन्दन, समरथ लखि शरणै आयो॥सं०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

देवजीर सुखदास कमल–वासित सित सुन्दर अनियारे।
पुंज धरों इन चरणन आगें, लहों अखयपदको प्यारे॥सं०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, चम्पा जूही सुमन वरा।
तासौं पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा॥
संभव जिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै।
निजनिधि ज्ञान–दरश सुख–बीरज, निराबाध भविजन पावै॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना।
तासों पद श्रीपति को पूजत, छुधारोग ततकाल हना॥सं०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घटपटपरकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों।
केवलजोत उद्योतं होहु मोहि, यही सदा अरदास करों॥सं०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागर श्री–खंडादिक चूर हुताशनमें।
खेवत हौं तुम चरनजलजढिग, कर्म छार जरि हैं छिनमें॥सं०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं।
ले फल पाशुक पूजौं तुम पद, देहु अखय पद नाथ हमैं॥सं०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमको अरपों भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनि पिया॥सं०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : चौपाई)

माता-गर्भ-विषैं जिन आय। फागुनसित आठैं सुखदाय॥
सेयो सुरतिय छप्पन वृन्द। नानाविध मैं जजौं जिनन्द॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

कार्तिक सित पूनम तिथि जान। तीनज्ञानजुत जनम प्रमान॥
धरि गिरिराज जजैं सुरराज। तिन्हें जजों मैं निजहित काज॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिरसित पून्यु तप धार। सकल संग तजि जिन अनगार॥
ध्यानादिक बल जीते कर्म। चर्चों चरण देहु शिवशर्म॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कलि तिथि चौथ महान्। घाति घात लिय केवलज्ञान॥
समवसरन महँ तिष्ठे देव। तुरिय चिह्न चर्चों वसुभेव॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थीदिने केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल तिथि षष्ठी घोख। गिरिसमेदतैं लीनों मोख॥
चारशतक धनु अवगाहना। जजो तासु पद थुतिकर घना॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्रीसंभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज।
मैं वशभक्ति सुधीठ हवै, विनवों निजहितकाज॥१॥

(छन्द मोतियादाम)

जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट। सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट॥
धरे वृषचक्र करे अघ चूर। अतत्त्व-क्षपातम-मर्दन-सूर॥२॥

सुतत्त्वप्रकाशन शासन शुद्ध। विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध॥
दया–तरु–तर्पन मेघ महान। कुनैगिरिगंजन वज्र समान॥३॥

सुगर्भरु जन्ममहोत्सवमांहि। जगज्जन आनन्दकंद लहाहिं॥
सुपूरव साठहि लक्ष जु आय। कुमार चतुर्थम अंश रमाय॥४॥

चवालिस लाख सुपूरव एव। निकंटक राज कियो जिनदेव॥
तजे कछुकारन पाय सु राज। धरे व्रत संजम आतमकाज॥५॥

सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान। धरे बनमें निज आतम ध्यान॥
कियो चव घातिकर्म विनाश। लयो तब केवलज्ञान प्रकाश॥६॥

भई समवसृत ठाठ अपार। खिरै धुनि झेलहिं श्रीगणधार॥
भनै षटद्रव्यतने विस्तार। चहूँ अनुयोग अनेक प्रकार॥७॥

कहे पुनि त्रेपन भाव विशेष। उभै विधि हैं उपशम्य जु भेष॥
सुसम्यक् चारित भेद स्वरूप। अबैं इमि क्षायक नौ सु अनूप॥८॥

दृगौं बुधि सम्यक् चारितदान। सु लाभरु भोगुपभोग प्रमान॥
सु बीरज संजुत ए नव जान। अठार क्षयोपशमं इमि मान॥९॥

मति श्रुत अवधि उभै विधि जान। मनःपर्यय चखु और प्रमान॥
अचक्खु तथाविधि दान-रु लाभ। सुभोगुपभोग रु बीरजसाभ॥१०॥

व्रताव्रत संजम और सुधार। धरे गुन सम्यक् चारितसार॥
भये वसु एक समापत येह। इकीस उदीक सुनो अब जेह॥११॥

चहुँ गति चारि कषाय त्रिवेद। छलेश्य और अज्ञानविभेद॥
असंयमभाव लखो इसमांहि। असिद्धित और अतत्त्व कहाहिं॥१२॥

भये इकवीस सुनो अब और। विभेद त्रयं परिणामिक ठौर॥
सुजीवित भव्यत और अभव्व। तरेपन एम भने जिन सब्ब॥१३॥

तिन्हों महँ केतक त्यागनजोग। कितेक गहेतैं मिटै भवरोग॥
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख। अनंतगुनातममंडित चोख॥१४॥

जजौं तुम पाय जपौं गुनसार। प्रभु हमको भव सागर तार॥
गही शरणागत दीनदयाल। विलंब करो मति हे गुनपाल॥१५॥

(धत्ता)

जै जै भवभंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा।।
'वृन्दावन' वंदित मनआनंदित, दीजै आतमज्ञानवरा।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : अडिल्ल)

जौ बांचे यह पाठ सरस सम्भवतनो।
सो पावै धनधान्य सरस सम्पति घनो।।
सकल पाप क्षय जात सुयश जगमें बढ़े।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़े।।१७।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

इति श्री संभवनाथजिनपूजा समाप्ता।।४।।

श्री अभिनन्दननाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : मदावलिसकपोल)

अभिनन्दन आनन्दकन्द, सिद्धारथ–नन्दन।
संवरपिता दिनंद चंद, जिहिं आवत वन्दन॥
नगर अजोध्या जनम इन्द्र, नागेन्द्र जु ध्यावैं।
तिन्हें जजनके हेत थापि, हम मंगल गावैं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(छंद : गीता)

पदमद्रहगत गंग चंग अभंग, धार सुधार है।
कनकमणिगनजटित झारी, द्वारधार निकार है॥
कलुषतापनिकंद श्री अभिनन्द अनुपम चन्द है।
पदकंद वृंद जजे प्रभु, भवदंद-फंद-निकंद है॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

शीत चन्दन कदलिनन्दन, सुजल संघ घसायकैं।
ह्वै सुगंध दशों दिशामें, भ्रमैं मधुकर आयकैं॥कलुष०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

हीरहिम-शशिफेन-मुक्ता, सरिस तन्दुल सेत हैं।
तासको ढिग पुंज धारौं, अखय पदके हेत हैं॥कलुष०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०

समर-सुभट-निघटन-कारन, सुमन सुमनसमान हैं।
सुरभितैं जापैं करै, झंकार मधुकर आन हैं॥कलुष०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति०

सरस ताजे नव्य गव्य, मनोज्ञ चित हर लेयजी।
क्षुदाछेदन छिमा-छितिपति, के चरन चरचेयजी।।
कलुषतापनिकंद श्री अभिनन्द अनुपम चन्द है।
पदकंद वृंद जजे प्रभु, भवदंद-फंद-निकंद है।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति०

अतितमसु मर्दन किरनवर, बोधभानुविकास है।
तुम चरनढिग दीपक धरों, मोहि होहु स्वपरप्रकाश है।।कलुष०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति०

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगनि जराय है।
सब करमकाष्ट सुकाष्टमें मिस, धूमधूम उड़ाय है।।कलुष०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम निम्बू सदा फलादिक, पक्व पावन आनजी।
मोक्षफलके हेत पूजौं, जोरिकैं जुगपानजी।।कलुष०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही।।कलुष०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : हरिपद)

शुकलछठ वैशाखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव।
सिद्धारथमाता के उरमें, करै शची शुचि सेव।।

रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेक प्रकार।
ऐसे गुननिधिकों मैं पूजौं, ध्यावौं बारम्बार।।१।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठीदिने गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघशुक्लतिथि द्वादशिके दिन, तीन लोक हितकार।
अभिनन्दन आनन्दकन्द तुम, लीन्हो जगअवतार।।
एक महूरत नरकमांहि हू, पायो सब जिय चैन।
कनकबरन कपिचिह्नधरन पद, जजौं तुम्हें दिनरैन।।२।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घं०

साढ़े छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग।
कछु कारन लखि माघशुकल, द्वादशिको धारयो जोग।।
षष्ठम नेम समापति करि लिय, इन्द्रदत्त धर छीर।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरमदुखदाय।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय।।
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकंद।
मोकौं भवसागरतैं तारो, जय जय जय अभिनन्द।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरिसमेदतैं मोख।
माससकल सुखराश कहे, वैशाखशुकल छठ चोख।।
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगतभाव उमगाय।
हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि, विघनसघन मिट जाय।।५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम।
कनकवरन अवलोकिके, पुनि पुनि करूं प्रणाम।।१।।

(छन्द : लक्ष्मीधरा)

सच्चिदानन्द सद्ज्ञान सद्दर्शनी। सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी।
सर्व आनन्दकन्दा महादेवता। जासु पादाब्ज सेवैं सबैं देवता।।२।।

गर्भ औ जन्म निःकर्मकल्यानमें। सत्त्वको शर्म पूरे सबै थानमें।
वंशइक्ष्वाकु में आप ऐसे भये। ज्यों निशाशर्द में इन्द्र स्वच्छै ठषे।।३।।

होत वैराग्यलौकांतसुर बोधियो। फेरि शिविकासु चढि गहन निजसोधियो।।
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो। समवसरनादि धनदेव तब निरमयो।।४।।

एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी। गोल साढ़ेदशैं जोजने जत्नकी।।
च्यारदिशपैड़िका बीस हज़ार हैं रत्नके चूरका कोट निरधार हैं।।५।।

कोट चहूँ ओर चहुँ द्वार तोरन खँचे। तासु आगै चहूँ मानथम्भा रचे।।
मान मानी तजै जासु ढिग जायकैं। नम्रता धार सेवैं तुम्हें आयकैं।।६।।

बिम्ब सिहासनोंपै जहाँ सोहहीं। इन्द्रनागेन्द्र केते मनैं मोहहीं।।
वापिका वारिसों यत्र सोहै भरी। जासमें न्हात ही पाप जावे टरी।।७।।

तास आगैं भरी खातिका वारिसों। हंस सू आदि पंखी रमैं प्यारसौं।।
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छैं जहाँ। फूल औ श्रीफलें सर्वही हैं तहाँ।।८।।

कोट सुवर्ण का तासु आगे खड़ा। चार दर्वाजा चोओर रत्न जड़ा।।
च्यार उद्यान चारों दिशा मैं गना। है धुजापंक्ति औ नाटशाला बना।।९।।

तासु आगै त्रितीकोट रूपामयी। तूप नौ जासु चारों दिशामें ठयी।।
धाम सिद्धांतधारीनके हैं जहाँ। औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठे तहां।।१०।।

तास आगैं रची गंधकूटी महा। तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा॥
एकपैं तो निधैं ही धरी ख्यात है। भव्यप्रानी तहां लौं सबैं जात है॥११॥

दूसरी पीठपै चक्रधारी गमै। तीसरे प्रातिहार्ये लसै भागमैं॥
तासपैं वेदिका चार थम्भानकी। है बनी सर्वकल्यानके खानकी॥१२॥

तासपैं है सुसिंहासनं भासनं। जासपै पद्म प्राफुल्ल है आसनं॥
तासुपै अंतरीक्षं विराजै सही। तीनछत्रै फिरें शीसरत्नै यही॥१३॥

वृक्ष शोकापहारी अशोकं लसै। दुन्दुभीनाद औ पुष्प खंते खसैं॥
देहकी ज्योतिसो मंडलाकार है। सात भव भव्यतामें लखे सार है॥१४॥

दिव्यवानी खिरै सर्व शंका हरै। श्रीगनाधीश झेलैं सुशक्ती धरै॥
धर्मचक्री तुही कर्मवक्री हने। सर्वशक्री नमैं मोदधारैं घने॥१५॥

भव्यको बोधि सम्मेदतें शिवगये। तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तिमये॥
हे कृपासिंधु मोपैं कृपा धारिये। घोर संसारसों शीघ्र मो तारिये॥१६॥

(धत्ता)

जै जै अभिनन्दा आनन्द कन्दा, भवसमुद्रवरपोत इवा॥
भ्रमतमशतखंडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जगरैनदिवा॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(कवित्त)

श्री अभिनन्दन पापनिकन्दन, तिनपद जो भवि जजैं सुधार।
ताके पुण्यभानु वर उग्गै, दुरिततिमिर फाटै दुखकार॥
पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह, विकसै सुखत जगतहित प्यार।
कछुक कालमें सो शिव पावै, पढ़ै सुनैं जिन जजैं निहार॥१८॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ॥

श्री सुमतिनाथ जिनपूजा

॥ स्थापना ॥

(कवित्त रूपक मात्रा ३१)

संजमरतन विभूषन भूषित, दूषनदूषन श्रीजिनचन्द।
सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयन्त तजि मेरुनरिंद॥
मातुमंगला सकलमंगला, नगर विनीता जये अमन्द।
सो प्रभु दयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदंद॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(छन्द कवित्त तथा कुसुमलता)

पञ्चमउदधितनों सम उज्वल, जल लीनों वरगंध मिलाय।
कनककटोरीमाँहिं धारिकरि धार देहु शुचि मनवचकाय॥
हरिहरवन्दित पापनिकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर मिलाय।
भवतपहरन चरन पर वारों, जनमजरामृततताप पलाय॥हरि०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिसमउज्वल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास।
सो लै अखयसंपदाकारन, पुंज धरों तुंम चरणन पास॥हरि०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमलकेतकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय।
सो लै समरशूलक्षयकारण, जजों चरन अति प्रीति लगाय।।
हरिहरवन्दित पापनिकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नव्य गव्य पकवान बनाऊँ, सुरस देखि दृगमन ललचाय।
सो लै क्षुधारोगछयकारण, धरौं चरणढिग मन हरषाय।।हरि०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनजटित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय।
दीप धरों तुम चरणन आगे, जातें केवलज्ञान लहाय।।हरि०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगनिमें देत जराय।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं धूम धूम यह तासु उडाय।।हरि०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल मातुलिंग वर दाडिम, आम निंबु फल प्रासुक लाय।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय।।हरि०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय।
नाचि नाचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय।।हरि० ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(रूप चौपाई)

संजयंत तजि गरभ पधारे। सावणसेतदुतिय सुखकारे।
रहे अलिप्त मुकुट जिमि धाया। जजौं चरण जय जय जिनराया॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयादिने गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल ग्यारस कहं जानों। जनमें सुमति सहित त्रयज्ञानों॥
मानो धरयो धरम अवतारा। जजों चरणजुग अष्टप्रकारा॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लेकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल ग्यारस तिथि भाखा। तादिन तप धरि निजरस चाखा॥
पारण पद्मसद्म पय कीनों। जजत चरण हम समता भीनों॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकलचैत एकादशि हने। घाति सकल जे जुगपति जाने॥
समवसरनमँह कहि वृषसारं। जजहूँ अनन्तचतुष्टयधारं॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतशुकलग्यारस निरवानं। गिरिसमेदतैं त्रिभुवनमानं॥
गुन अनंत निज निरमलधारी। जजौं देव सुधि लेहु हमारी॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सुमति तीनसौ छत्तिसो, सुमतिभेद दरशाय।
सुमति देहु विनती करों, सुमति[१] विलम्ब कराय॥१॥

दयाबेलितरु सुगुननिधि, भविककमोद-गण चन्द।
सुमतिसतीपति सुमतिकों, ध्यावौं धरि आनन्द॥२॥

पंच परावरतन हरन, पञ्चसुमति सित देन।
पञ्चलब्धि दातार के, गुन गाऊँ दिनरैन॥३॥

(छन्द : भुजंगप्रयात)

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा। जपै नाम जाको सबै दुःख भाजा॥
महासूर इक्ष्वाकुवंशी विराजै। गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै॥४॥

तिन्होंके महापुण्यसौं आप जाये। तिहूँलोकमें जीव आनंद पाये॥
सुनासीर ताही धरी[३] मेरु धायो। किया जन्मकी सर्व कीनी यथायो॥५॥

बहुरितातकों सोंपि संगीत कीनों। नमें हाथ जोरे भली भक्तिभीनों॥
बिताई दशैलाख ही पूर्व बालै[४]। प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै॥६॥

कछू हेतुतैं भावना बार[५] भाये। तहाँ ब्रह्मलौकांतके देव आये॥
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो। धरे पालकी में सु उद्यान ल्यायौ॥७॥

नमैं सिद्धको केशलोंचे सबै ही। धरयो ध्यान शुद्धं जु घाती हने ही।
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं। गणाधीश जू एकसौ सोल राजं॥८॥

खिरैं शब्द तामैं छहों द्रव्य धारे। गुनौपर्जउत्पादव्ययध्रौव्य सारे॥
तथा कर्म आठों तनी थित्तिगाजं। मिलै जासुके नाशतें मोच्छराजं॥९॥

धरैं मोहिनी सत्तरं कोड़ाकोड़ी। सरितत्रमाणं थितिं दीर्घ जोड़ी॥
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अन्तरायं। धरैं तीसकोडाकोडि सिंधुकायं॥१०॥

१. मत, नहीं। २. इन्द्र। ३. समय। ४. बालकपन। ५. बारह।

तथा नामगोतं कुड़ाकोड़ि बीसं। समुद्रप्रमाण धरैं सत्तईसं॥
सुतैतीसअब्धिं धरें आयु अब्धिं। कही सर्वकर्मोतनी वृद्धलब्धिं॥११॥

जघन्यप्रकारै धरैं भेद ये ही। मुहूर्त्तवसू नामगोतं गने ही॥
तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं। सुअंतमुर्हूर्त्तं धरैं थित्त गायं॥१२॥

तथा वेदिनी बारहें ही मुहूर्त्तं। धरै थित्त ऐसैं भन्यो न्यायजुत्तं॥
इन्हैं आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेषा। लह्यो फेरि निर्वान माही प्रवेशा॥१३॥

अनन्तं महन्तं सुसन्तं सुतन्तं। अमन्दं अफन्दं अनन्दं अभन्तं॥
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं। अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं॥१४॥

अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं। अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं॥
अनेकं सदेकं चिदेकं विदेकं। अखण्डं सुमंडं प्रचण्डं तदेकं॥१५॥

सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं। अनन्त गुनाराम जैवन्त वर्मं॥
नमैं दास 'वृन्दावनं' शर्न आई। सबै दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई॥१६॥

(धत्ता)

तुव सुगुन अनन्ता, ध्यावत सन्ता, भ्रमतमभंजन मार्तंडा।
सतमतकरचंडा भविकजमंडा, कुमतिकुबलइन-गन हण्डा॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : रोडक/अडिल्ल)

सुमतिचरण जो जजें, भविक जन मनवचकाई।
तासु सकलदुखदन्द फन्द, ततछिन छय जाई॥
पुत्रमित्र धनधान्य, शर्म अनुपम सो पावै।
'वृन्दावन' निर्वाण, लहै जो निहचै ध्यावै॥१८॥

॥ इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री पद्मप्रभ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ छन्द रोड़क (मदावलिप्त कपोल)

पदमरागमनिवरनधरन तवतुंग अढ़ाई।
शतक दण्ड अघखण्ड, सकल सुर सेवत आई॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नन्दन।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वन्दन॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चाल होलीकी–ताल जत्त)

पूजों भावसों श्रीपद्मनाथपद सार, पूजों भावसों॥टेक॥
गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय॥
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपद्मनाथपद सार पूजों भावसों॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागर कपूर चंदन घसि, केशरसंग मिलाय।
भवतपहरन चरनपर वारौं, मिथ्याताप मिटाय॥ पूजों०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल उज्वल गन्ध अनीजुत, कनकथाल भर लाय।
पुञ्ज धरौं तव चरणन आगैं, मोहि अखयपद दाय। पूजों०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मन्दारकल्पतरु, जनित सुमन शुचि लाय।
समरशूल निरमूल करनकौं, तुम पद-पद्म चढ़ाय॥पूजों०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचिभाय।
क्षुधा-रोग निर्वारन कारन, जजौं हरष उर लाय।।
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपद्मनाथपद सार पूजों भावसों।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजौं चरन गुनधाम।।पूजों०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर मलयागर चन्दन, चूरि सुगन्ध बनाय।
अग्निमांहि जारों तुम आगैं, अष्टकरम जरि जाय।।पूजों०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरण यह, विघन करमनिरवार।।पूजों०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदि मिलाय गाय, गुन, भगतिभाव उमगाय।
जजौं तुम्हैं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय।।पूजों०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी)

असित माघ सु छट्ठ बखानिये। गरभमंगल तादिन मानिये।।
उरधग्रीवकसौं चय राजजी। जजत इन्द्र जजैं हम आजजी।।१।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठीदिने गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं०

सुकल कार्तिक तेरसको जये। त्रिजगजीव सु आनन्दकों लये॥
नगर स्वर्गसमान कुसम्बिका। जजतु हैं हरिसंजुत अम्बिका॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकल तेरस कार्तिक भावनी। तप धरयो वन षष्टम पावनी॥
करत आतमध्यान धुरन्धरो। जजत हैं हम पाप सबैं हरो॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकल पूनम चैत सुहावनी। परमकेवल ता दिन पावनी॥
सुरसुरेश नरेश जजै तहाँ। हम जजैं पदपंकजको इहां॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित फागुन चौथ सुजानियो। सकलकर्म महारिपु हानियो॥
गिरिसमेदथकी शिवको गये। हम जजैं पद ध्यानविषैं लये॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(धत्ता)

जय पद्मजिनेशा, शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा।
जय भवतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजनको दिवसाधेशा॥१॥

(छन्द रूप चौपाई १६ मात्रा)

जय जय जिन भविजन हितकारी। जय जय जिनभव सागरतारी॥
जय जय समवसरन धनधारी। जय जय वीतराग हितकारी॥२॥

जय तुम सप्त तत्त्वविधि भाख्यो। जय जय नवपदार्थलखि आख्यौ।।
जय षट्द्रव्य पंच जुतकाया। जय सबभेद सहित दरशाया।।३।।

जय गुनथान जीव परमानों। जय पहिले अनंत जिय जानो।।
जय दूजे सासादन माहीं। तेरहकोड़ि जीवथिति आंही।।४।।

जय तीजे मिश्रित गुणथाने। जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने।।
जय चौथे अविरत–गुन जीवा। चारअधिक शतकोड़ि सदीवा।।५।।

जय जिय देशविरतमें शेषा। कौड़ी सातसौ हैं थिति वेशा।।
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु। पांच तीन नव पांच जीव लसु।।६।।

जय जय अपरमत्तगुन कोरं। लच्छ छयानवै सहस बहोरं।।
निन्यानवे एकशत तीना। एते मुनि तित रहहिं प्रवीना।।७।।

जय जय अष्टममें दुई धारा। आठशतक सत्तानों सारा।।
उपशममें दुइसो निन्यानौं। क्षपकमाँहि तसु दूने जानों।।८।।

जय इतने इतने हितकारी। नवैं दशैं जुगश्रेणी धारी।।
जय ग्यारैं उपशममगगामी। दौसै निन्यानौं अघआमी।।९।।

जय जय खीणमोह गुनथानों। मुनि शतपांच अधिक अट्ठानों।।
जय जय तेरहमें अरहंता। जुग[३] नभ[०] पन[५] वसु[८] नव[९] वसु तंता।।१०।।

एते राजतु हैं चतुरानन। हम बंदै पद थुतिकरि आनन।।
जय अजोग गुनमें जे देवा। पनसौ ठानों फरो सुसेवा।।११।।

तित तिथि अइउऋलृ लघु भाषत। करि थिति फिर शिवआनंद चाखत।।
ए उत्कृष्ट सकल गुणथानी। तथा जघन्य मध्य जे प्रानी।।१२।।

तीनों लोक सदन के वासी। पुन-परजाय भेद परकाशी।।
तथा और द्रव्यनके जेते। गुनपरजाय भेद हैं तेते।।१३।।

तीनों कालतने जु अनन्ता। सो तुम जानत जुगपत संता।।
सोई दिव्यवचनके द्वारे। दे उपदेश भविक उद्धारे।।१४।।

फेरि अचल थलवासा कीनों। गुन अनन्त निजआनन्द भीनों॥
चरमदेहतें किंचित् ऊनो। नर आकृति तिथि हैं नित गूनों॥१५॥

जय जय सिद्धदेव हितकारी। बार बार यह अरज हमारी॥
मोकौं दुखसागरतें काढ़ो। 'वृन्दावन' जाचतु हैं ठाढ़ो॥१६॥

(धत्ता)

जय जय जिनचन्दा पद्मानन्दा, परमसुमति पद्माधारी।
जय जनहितकारी दया विचारी, जय जय जिनवर अधिकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : रोडक / अडिल्ल)

जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत।
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनन्दकन्द शत॥
लहत स्वर्गपदराज, तहांतें चय इत आई।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई॥१८॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री पद्मप्रभजिनेन्द्रपूजा समाप्ता॥५॥

श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : हरिगीता तथा गीता)

जय जय जिनिन्द गनिन्द इन्द, नरिंद गुन चिंतन करै।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरै॥
नृप सुपर तिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया।
तिन-नन्दके पद वंद वृन्द, अमन्द थापतु जुतक्रिया॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(चाल द्यानतरायजी कृत सोलहकारण भाषा अष्टककी)

तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो॥
उज्वल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो॥तुम० देव०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागरचन्दन घसि सार, लीनों भवतपभञ्जनहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो॥तुम० देव०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

देवजीर सुखदास अखण्ड, उज्वल जलक्षालित सित मंड।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो॥तुम० देव०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सुमन सुगन्धित सार, गुञ्जत अलि मकरध्वजहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो॥तुम० देव०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा हरन नेवज वर लाय। हरो वेदनी तुम्हें चढ़ाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।
उज्वल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।। तुम० देव०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्वलित दीप भरिकर नवनीत। तुमढिग धारतु हों जगमीत।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम० देव०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविधि गन्ध हुताशनमांहिं। खेवत क्रूर करम जरि जाहिं।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम० देव०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आदि अनूप। लै तुम अग्र धरौं शिवभूप।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम० देव०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठौं दरब सजि गुनगाय। नाचत राचत भगति बढ़ाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम० देव०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द द्रुतविलंबित तथा सुंदरी)

सुकलभादव छट्ठ सुजानिये। गरभमंगल तादिन मानिये।।
करत सेव शची रति मातकी। अरघ लेय जजों वसु भांतिकी।।१।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठीदिने गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकलजेष्ठदुवादशि जन्मये। सकल जीव सु आनन्द तन्मये॥
त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी हम जजैं पद मंगलसाजजी॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमके तिथि श्रीधरने धरी। तप समस्त प्रमादनको हरी॥
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों। हम जजैं इत श्रीपद चावसों॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमरफागुनछट्ट सुहावनो। परमकेवलज्ञान लहावनों॥
समवसर्नविषैं वृष भाखियो। हम जजैं पद आनन्द चाखियो॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठिदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असितफागुणसांतय पावनो। सकलकर्म कियो क्षय भावनों॥
गिरि समेदथकी शिव जातु हैं। जजत ही सब विघ्न विलातु हैं॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तमीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

तुंग अंग धनु दोयसो, शोभा सागरचन्द।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपार्श्व सुखकन्द॥१॥

(छन्द कामिनीमोहन)

जैति जिनराज शिवराज हितहेत हो।
परमवैराग आनन्द भरि देत हो॥

गर्भके पूर्व षटमास धनदेवने।
नगर निरमापि बाराणसी सेवने॥२॥
गगनसौं रतनकी धार बहु वर्षहीं।
कोड़ि क्षयअर्द्ध त्रयवार सब हर्षहीं॥
तातके सदन गुनवदन रचना रची।
मातुकी सर्वविधि करत सेवा शची॥३॥

भयो जब जनम तब इन्द्रआसन चल्यो।
होय चकित तुरित अवधितैं लखि भल्यो॥
सप्त पग जाय शिर नाय वंदन करी।
चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि धरी॥४॥

सात विधि संत गज वृषभ रथ बाज लै।
गंधरव निरतकारी सबै साज लै॥
गलितमदगंज ऐरावती साजियो।
लक्षजोजन सु तन वदन सत राजियो॥५॥

वदन वसुदन्त प्रतिदंत सरवर भरे।
तासु मधि शतकपनबीस कमलिनि खरे॥
कमलनी मध्य पनबीस फूले कमल।
कमलप्रति कमलमहँ एकसौआठ दल॥६॥

सर्वदल कोड़शतबीस परमान जू।
तासु पर अपछरा नचहिं जुतमान जू॥
तततता ततततता विततता ताथेई।
धृगतता धृगतता धृगततामें लई॥७॥

धरत पग सनन नन सनन नन गगनमैं।
नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमें॥
नचत इत्यादि कई भाँतिसौं मगनमें।
केइ तित बजत बाजे मधुर पगनमें॥८॥

केई दृम दृम सुदृम दृम मृदंगनि धुनै।
केइ झल्लरि झननन झननन झंझनै॥
केइ संसागृदि संसागृदि सारंगि सुर।
केइ वीनापटह वंशि बाजै मधुर॥९॥

केई तननन तननन तानै पुरैं।
शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरै॥
केइ झुकि झुकि फिरैं चक्रसी भामिनी।
धृगततां धृगततां परम शोभा बनी॥१०॥

केई छिन निकट छिन दूर छिन थूल लधु।
धरत वैक्रियकपरभावसौं तन सुभगु॥
केइ करताल करताल करमें धुने।
तत वितत घन सुखरि जात बाजै मुनै॥११॥

इन्हें आदिक सकल साज संग धारिकैं।
आय पुर तीन फेरी करी प्यार कै॥
सचिय तब जाय परसूतथल मौदमें।
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें॥१२॥

आन गिरवाननाथहिं दियो हाथमें।
छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें॥
चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो।
जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो॥१३॥

लेय पश्चमउदधिउदक कर सुरनि।
सुरन कलशनि भरे सहित चर्च पुरनि॥
सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबै।
अघघ घघ घघघ घघ भभभ भभ भौ तबैं॥१४॥

धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है।
भव्यजनहँसके हरष उद्योत है॥

भयै इमि न्हौन तव सकल गुनरंगमें।
पोंछि शृंगार कीनों शची अंग में॥१५॥

आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो।
बाललय तरुन लहि राजसुख भोगियो॥
भोग तज जोग गहि चार अरिको हने।
धारि केवल परमधरम द्वयविधि भने॥१६॥

नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये।
ज्ञान दृग शर्म बीरज अनन्ते लये॥
सो जगतराज यह अरज उर धारियो।
धरमके नन्दको भवउदधि तारियो॥१७॥

(धत्ता)

जय करुनाधारी, शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो।
सेवक नित बंदै, मन आनन्दै, भवभयमेटनकाजा हो॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्रीसुपार्श्वपदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनन्द ठाठ॥१९॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ॥

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : छप्पय)

चारुचरन आचरन चरन चितहरन चिहनचर।
चंद चंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर॥
चतुक चंड चकचूरि, वारि चिदचक्र गुनाकर।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर॥

चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि॥१॥

(दोहा)

धनुष देढसौ तुंग तन, महासेन नृपनंद।
मातुलछमनाउर जये, थापों चंदजिनंद॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(चाल : द्यानतरायकृत नन्दीश्वर अष्टककी, अष्टपदी तथा होली आदि में।)

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा।
तुम चरण जजों वरवीर, मेटो जनमजरा॥
श्रीचन्दनाथदुति चंद चरणन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद आतम जोति जगै॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्डकपूर सुचंग, केशररंग भरी।
घसि प्रासुकजलके संग, भवआताप हरी॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित सोमसमान, सम ले अनियारे।
दिय पुञ्ज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे।
श्रीचन्दनाथदुति चंद चरणन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद आतम जोति जगै॥३॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै।
तासों पद पूजत चंग, काम विथा जावै॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज नानापरकार, इन्द्रियबलकारी।
सौ लै पद पूजों सार, आकुलताहारी॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमभंजन दीप संवार, तुमढिग धारतु हों।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण धारतु हों॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधहुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवतु हौं।
मम करम दुष्ट जरि जाहि, यातें सेवतु हौं॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुणगावतु हौं।
पूजौं तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं॥श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनि गमों॥श्री०॥९॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द द्रुतविलम्बित तथा सुंदरी मात्रा १६)

कलिपंचम चैत सुहात अली। गरभागम मंगल मोद भली॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता। हम ध्यावत पावत शर्मसिता॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापञ्चम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौषइकादशि जन्म लयो। तव लोकविषै सुखथोक भयो॥
सुर ईश जजें गिरशीश तबैं। हम पूजत हैं नुतशीश अबैं॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा। कलिपौष इग्यारसि पर्व वरा॥
निजध्यान विषै लवलीन भये। धनि सो दिन पूजत विघ्न गये॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णेकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वर केवलभानु उद्योत कियो। तिहुँ लोकतणो भ्रम मेट दियो॥
कलि फाल्गुनसप्तमि इन्द्र जजे। हम पूजहिं सर्व कलंक भजे॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णासप्तम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये। गुणवन्त अनन्त अबाध भये॥
हरि आय जजे तित मोद धरे। हम पूजत ही सब पाप हरें॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

हे मृगांकअंकितचरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौकौ वरणत सार॥१॥

पै तुम भगति हिये मम, प्रेरे अति उमगाय
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय॥२॥

(तामरस)

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान। भवकानन–हानन–दवप्रमान॥
जय गरभजनममंगल दिनन्द। भवि जीवविकासन शर्मकंद॥३॥

दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय। मनवांछित सुख भोगे जिनाय॥
लहि कारण हूवै जगतैं उदास। चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग। हरि शिविका सजि धरियो अभोग॥
तापैं तुम चढ़ि जिनचन्दराय। ता छिनकी शोभा को कहाय॥५॥

जिन अंग सेत सित चमर ढार। सित छत्र शीश गल–गुलकहार॥
सित रतनजड़ित भूषण विचित्र। सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र॥६॥

सित तनुद्युति नाकाधीश आप। सित शिविका कांधे धरि सुचाप॥
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व। सित चितमैं चिंतित जात पर्व॥७॥

सित चंदनगरतैं निकसि नाथ, सित बनमैं पहुँचे सकलसाथ॥
सितशिलाशिरोमणि स्वच्छ छाँह। सित तप तित धारयो तुम जिनाह॥८॥

सित पयको पारण परमसार। सित चन्द्रदत्त दीनों उदार॥
सित करमें सो पय धार देत। मानों बांधत भवसिन्धु सेत॥९॥

मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ। तित अचरज पन सुर किय ततच्छ॥
फिर जाय गहन सित तपकरंत। सित केवलज्योति जग्यो अनन्त॥१०॥

लहि समवसरण रचना महान। जाके देखत सब पाप–हान॥
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग। सब शोक तनों चूरै प्रसंग॥११॥

सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात। मनु मन्मथ तज हथियार जात॥
बानी जिनमुखसौं खिरै सार। मनु तत्त्व प्रकाशन मुकुरधार॥१२॥

जहँ चौसठ चमर अमर ढुरंत। मनु सुजश मेधघरि लगि पतन्त॥
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त। मनु शिवसरवरको कमलशुक्त॥१३॥

दुन्दुभि जित बाजत मधुर सार। मनु करमजीतको है नगार॥
सिर छत्र फिरै त्रय स्वेतवर्ण। मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण॥१४॥

तन–प्रभातनों मण्डल सुहात। भवि देखत निजभव सात सात॥
मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय। भविजन भवमुख देखत सुआय॥१५॥

इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीखत महिमा महान॥
ताको वरणत नहिं लहत पार। तौ अन्तरंगको कहै सार॥१६॥

अनअन्त गुणनिजुत करि विहार। धरमोपदेश दे भव्य तार॥
फिर जोगनिरोध अघातिहान। सम्मेदथकी लिय मुक्तिथान॥१७॥

'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय॥
तातै का कहौं सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार॥१८॥

(धत्ता)

जय चन्दजिनन्दा, आनन्दकन्दा, भवभय–भंजन राजत हैं॥
रागादिकद्वन्दा, हरि सब फन्दा, मुक्तिमांहि थिति साजैं हैं॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चौबोला)

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं॥२०॥

जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज सजैं॥२१॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभजिनपूजा समाप्ता॥८॥

श्री पुष्पदन्त जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(छन्द : मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क–मात्रा २४)

पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सुजयन्त तन्त गुन।
महिमावन्त महन्त कंत शिवतियरमन्त मुन॥
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीव रमासुत।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(चाल होली की–ताल जत्त)

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनराय, मेरी०॥टेक॥
हिमवतगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय।
करमकलंक निवारनकारन, जजों तुम्हारे पाय॥मेरी०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चंदन कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसाय।
चरचों चरन हरन मिथ्यातम, वीतराग गुणगाय॥मेरी०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसमद्युति दमकाय।
ताकों पुञ्ज धरों चरणनढिग, देहु अखयपद राय॥मेरी०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुञ्जत अलिगन आय।
ब्रह्मपुत्र–मदभंजन कारण, जजों तुम्हारे पाय॥मेरी०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर फेनी गुज्जा, मोदन मोदक लाय।
क्षुधावेदनीरोगहरनको, भेंट धरो गुणगाय।
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनराय, मेरी०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय।
तिमिर–मोहनाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय॥मेरी०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवर गंध धनंजय के संग, खेवत हौं गुण गाय।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरै सो, धूम धूम सु उडाय॥मेरी०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट[1], दाड़िम आम मँगाय।
तासों तुम पद पद्म जजत हों, विघन सघन मिट जाय॥मेरी०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय।
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय॥मेरी०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : स्वयंभू, मात्रा ३२)

नवमीतिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहि थितिदेवाजी।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवाजी॥
रतननकी धारा परमउदारा, परी व्योमतैं सारा जी।
मैं पूजौं ध्यावौं भगति बढ़ावौं, करो मोहि भवपाराजी॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं०

१. ककड़ी, खरबूजा।

मंगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथा जी।
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथा जी॥
सुरगिरि नहवाये मंगल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी।
मैं पूजौं ध्यावौं भगति बढ़ावौं, निजनिधिहेत सहाई जी॥२॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदादिने जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं०

सित मंगसिर मासा तिथि सुखरासा, एकमके दिन धारा जी।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी॥
सुरमित्र सुदानी के घर आनी गो-पय-पारन कीना है।
तिनको मैं बन्दौं पापनिकंदौ, जो समतारसभीना है॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं०

सितकार्तिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचंडा जी।
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकल सारसुख मंडाजी॥
गनराज अठासी आनन्दभासी समवसरण वृषदाता जी।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगत्राता जी॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०

आसिन सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाणा जी।
गुन अष्टप्रकारा अनुपम धारा, जै जै कृपा-निधाना जी॥
तित इन्द्र सु आये पूज रचाये, चिहन तहां कर दीना है।
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसौं, तुमरे रसमें भीना है॥५॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शतएक।
सुरनरवंदित मुकतिपति, नमों तुम्हें शिरटेक॥१॥
पहुपरदन गुनवरन जिम, सागरतोय समान।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान॥२॥

(छन्द : तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी मात्रा-१६)

पुष्पदन्त जयवन्त नमस्ते। पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते॥
ज्ञानध्यान अमलान नमस्ते। चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते॥३॥

भवभय भंजन देव नमस्ते। गुनिगनकृतपदसेव नमस्ते॥
मिथ्यानिशिदिनइन्द्र नमस्ते। ज्ञानपयोदधिचन्द नमस्ते॥४॥

भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते। रागदोषमदहंद नमस्ते॥
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते। धर्मसुधारसपूर नमस्ते॥५॥

केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते। सकल चराचरभास नमस्ते॥
विघ्नमहीधर–विज्रु नमस्ते। जय ऊरधगतिरिज्रु नमस्ते॥६॥

जय मकराकृतपाद नमस्ते। मकरध्वजमदवाद नमस्ते॥
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते। जय जय अधम उधार नमस्ते॥७॥

दयाधुरंधर धीर नमस्ते। जय जय गुनगंभीर नमस्ते॥
मुक्तिरमापति वीर नमस्ते। हरता भवभयपीर नमस्ते॥८॥

व्ययउतपतिथिति धार नमस्ते। निज अधार अविकार नमस्ते॥
भव्यभवोदधितार नमस्ते। 'वृन्दावन' निसतार नमस्ते॥९॥

(धत्ता) जय जय जिनदेवं, हरिकृतसेवं परमधरम-धनधारी जी॥
मैं पूजों ध्यावौं गुनगन गावों मेटो विथा हमारी जी॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : मदावलिसकपोल)

पुहपदंतपद संत, जजैं जो मन-वच-काई।
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई॥
सो पावै सुख सर्व, इंद अहमिंद तनों वर।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै निहश्चै प्रमोदधर॥११॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री पुष्पदंतजिनपूजा समाप्ता॥५॥

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : मत्तमातङ्ग तथा मत्तगयंद)

शीतलनाथ नमौं धरि हाथ, सु माथ जिन्हों भवगाथ मिटाये।
अच्युततैं च्युत मात सुनंदके, नंद भये पुरभद्दल भाये॥
वंश इक्ष्वाक कियौ जिनभूषित, भव्यन को भव–पार लगाये।
ऐसे कृपानिधिके पदपंकज, थाप्तु हौं हिय हर्ष बढ़ाये॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

छन्द वसंततिलका (वर्ण १४)

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ।
भृंगार हेमभरि भक्ति हिये बढ़ायौ॥
रागादिदोषमलमर्दनहेतु येवा।
चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

श्री खण्डसारवर कुंकुम गारि लीनों।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों॥रा०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं।
धारंत पुञ्ज कलिकुंज समस्त भाजैं॥रा०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीकेतकीप्रमुखपुष्प अदोष लायो।
नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायौ॥रा०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सार चरु चारु सँवारि लायौ।
जांबू नद प्रभृति भाजन शीस नायौ॥
रागादिदोषमलमर्द्दनहेतु येवा।
चर्चो पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्नेहप्रपूरित सुदीपक ज्योति राजै।
स्नेहप्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै॥रा०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरुप्रमुखगंध हुताशमाहीं।
खेवों तवाग्र वसुकर्म–जरन्त जाहीं॥रा०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निम्बाम् कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा।
सौवर्णगंध फलसार सुपक्व प्यारा॥रा०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंश्रीफलादि वसु प्रासुकद्रव्य साजे।
नाचे रचे मचत बज्रत सज्र बाजे॥रा०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : उपेन्द्रवज्रा)

आठैं वदी चैत सुगर्भमाहीं। आये प्रभु मंगलरूप थाहीं।
सेवै शची मातु अनेक भेवा। चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमाधकी द्वादशि श्याम जायो। भूलोकमें मंगलसार आयो।।
शैलेन्द्रपै इन्द्र फनीन्द्र जज्ञे। मैं ध्यान धारो भवदुःख भज्ञे।।२।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जानों। वैराग्य पायो भवभाव हानों।।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा। चर्चौं सदा चर्ण निवारि कोहा।।३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो। ताही दिना केवललब्धि पायो।।
शोभै समौसृत्य बखानि धर्म। चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्म।।४।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुँवार की आठँय शुद्धबुद्धा। भये महामोक्षसरूप शुद्धा।।
सम्मेदतैं शीतलनाथ स्वामी। गुनाकरं तासु पदं नमामी।।५।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छन्द लोलतरङ्ग (वर्ण ११)

आप अनन्तगुनाकर राजैं। वस्तुविकासन भानु समाजैं।।
मैं यह जानि गही शरना है। मोहमहारिपु को हरना है।।१।।

(दोहा)

हेम वरन तन तुंग धनु, नव्वै अति अभिराम।।
सुरतरु अंक निहारि पद, पुनि पुनि करों प्रणाम।।२।।

छन्द : त्रोटक (वर्ण १२)

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं। भवदाहदवानल मेघझरं॥
दुखभूभृतभंजन वज्रसमं। भवसागर नागर पोतपमं॥३॥

कुह मान मयागद लोभहरं। अरि विघ्नगयंद मृगेन्द्र वरं॥
वृषवारिदवृष्टन सृष्टिहितू। परदृष्टिविनाशन सुष्टिपितू॥४॥

समवसृतसंजुत राजतु हो। उपमा अभिराम विराजतु हो॥
वर बारहभेद सभा थित को। तित धर्म बखानि कियौ हितको॥५॥

पहले महिं श्रीगनराज रजैं। दुतिये महि कल्पसुरो जु सजैं॥
त्रितिये गणनी गुनभूरि धरैं। चवथे थितजोतिषजोति भरैं॥६॥

तिय व्यंतरनी पनमैं गनिये। छह में भुवनेसुरनी भनिये॥
भुवनेश दशों थित सप्तम हैं। वसुमें वसुव्यंतर उत्तम हैं॥७॥

नवमें नभजोतिष पंच भरे। दशमें दिविदेव समस्त खरे॥
नरवृन्द इकादश में निवसैं। अरु बारह में पशु सर्व लसैं॥८॥

तजि वैर प्रमोद धरै सब ही। समतारसमग्न लसैं तब ही॥
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं। गनराज असी धरि ज्ञानबलं॥९॥

सबके हित तत्त्व बखान करै। करुणामनरंजित शर्म भरैं॥
वर्णे षट्द्रव्यतने जितने। वर भेद विराजतु हैं तितने॥१०॥

पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना। इक धर्म दुती सुकलं अधुना॥
तित धर्म सुध्यानतणो गनियो। दशभेद लखे भ्रमको हनियो॥११॥

पहलो अरि नाश अपाय सही। दुतियो जिनवैन उपाय गही॥
त्रिति जीवविचै निजध्यावत है। चवथो सु अजीव रमावत है॥१२॥

पनमों सु उदै बलटारन है। छहमों अरि राग निवारन है॥
भवत्यागनचिंतन सप्तम है। वसुमों जितलोभन आतम है॥१३॥

नवमों जिनकी धुनि सीस धरैं। दशमो जिनभाषित हेतु करै॥
इमि धर्मतणो दशभेद भन्यो। पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो॥१४॥

सुपृथक्त्व वितर्कविचार सही। सुइकत्ववितर्क विचार गही॥
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही। विपरीतक्रियानिवृत्त लही॥१५॥

इन आदिक सर्व प्रकाश कियो। भविजीवनिको शिव स्वर्ग दियो॥
पुनि मोक्षविहार कियो जिनजी। सुखसागर मग्न चिरं गुनजी॥१६॥

अब मैं शरना पकरी तुमरी। सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी॥
भवव्याधि निवार करो अब ही। मति ढील करो सुख द्यो सब ही॥१७॥

(धत्ता)

शीतलजिन ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाउँ, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊँ।
भवद्वंद नशाऊँ, शिवथल जाऊँ, फेर न आऊँ भव वनमें।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : मालिनी)

दिढ़रथसुत श्रीमान्, पंचकल्याण धारी।
तिनपदजुग पद्मं, जो जजै भक्तिधारी॥
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै।
अनुक्रम अरि दाहैं, मोक्षको सो सिधावै॥१९॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्रीशीतलनाथजिनपूजा समाप्ता॥१०॥

श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

॥ स्थापना ॥

(छन्द रूपमाला तथा हरिगीता)

विमलनृप विमलासुअन[१], श्रेयांसनाथ जिनन्द।
सिंहपुर जनमे सकल हरि पूजि धरि आनन्द॥
भवबंधध्वंशनहेतु लखि मैं शरन आयो येव।
थापौं चरन जुग उर कमलमैं, जजनकारण[२] देव॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

छन्द गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८)

कलधौतवरन[३] उतंग[४] हिमगिरि पदमद्रहतैं[५] आवई।
सुरसरित प्रासुक-उदकसौं[६] भरि भृंगधार चढ़ावई॥
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवंद आनन्दकन्द हैं।
दुखद्वन्दफँदनिकन्द पूरणचंद जोति अमन्द हैं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर[७] वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसौ सही।
भवतापभञ्जनहेत भवदधिसेत[८] चरण जजों सही॥श्रे०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. पुत्र, २. पूजन हेतु,
३. स्वर्ण ४. ऊँचा,
५. पद्म नामक झील ६. जल
७. चन्दन ८. पुल

सितशालि शशिदुति शुक्ति[1] सुन्दरमुक्तिकी उनहार हैं।
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद[2] करतार हैं॥
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवंद आनन्दकन्द हैं।
दुखद्वन्दफँदनिकन्द पूरणचंद जोति अमन्द हैं॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सद[3] सुमन सुमन समान पावन, मलयतैं अलि झंकरै।
पदकमलतर धरतैं तुरति सो मदनको[4] मद क्षय करैं॥श्रे०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह परममोदक[5] आदि सरस सँवारि सुन्दर चरु लियो।
तुम वेदनीमदहरन लखि, चरचों चरन शुचिकर हियो[6]॥श्रे०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संशयविमोहविभरम–तम–भंजन दिनंद[7] समान हो।
तातैं चरणढिग दीप जोऊँ, देहु अविचलज्ञान हो॥श्रे०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया।
दहि अमरजिहव[8] विषै, चरण ढिग करम भरम जराइया॥श्रे०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावने।
ले भगतिसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावने॥श्रे०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल मलय तन्दुल सुमन चरु अरु दीपधूपफलावली।
करि अर्घ चरचों चरणजुगप्रभु मोहि तार उतावली॥श्रे०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. सीप २. अक्षय पद (मुक्ति) ३. सद्य--तुरत के तोडे हुए ४. कामदेव ५. लड्डू, ६. हृदय ७. सूर्य ८. अग्नि ।

पंचकल्याणक अर्घ

(आर्या)

पुष्पोत्तर तैं आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंकौं।
सुरनर मंगल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकाठैंकों[1] ।।१।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमे फागुणकारी, एकादशि तीनज्ञानदृगधारी।
इक्ष्वाकवंशतारी, मैं पूजौं घोर विघ्न दुखटारी।।२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतनभोग असारा, लख त्यागो धीर शुद्ध तपधारा।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्ट प्रकारा।।३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुजानन, माघवदी पूर्णतिथिको देवा।
चतुरानन[2] भवभानन, बन्दौं ध्यावौ करौ सुपदसेवा।।४।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको।
कुलिशायुध[3] गुनगायो, मैं पूजौं आप निकट आवनको।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणाशुक्लापूर्णिमायां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१. कर्मरूपी ईंधन
२. चारों ओर मुख दिखाई देनेवाले।
३. इन्द्र

जयमाला

(छन्द : लोलतरंग वर्ण २२)

शोभित तुंग शरीर सुजानो। पांच असी शुभलच्छन मानो॥
कंचनवर्ण अनुपम सोहै। देखत रूप सुरासुर मोहै॥१॥

(पद्धरी)

जै जै श्रेयांस जिन गुणगरिष्ठ[१]। तुम पदजुग दायक इष्ट मिष्ट[२]॥
जै शिष्टशिरोमणि जगतपाल। जै भविसरोजगन प्रातकाल॥२॥

जै पंच महाव्रत गजसवार। लै त्यागभावदलबल सु लार॥
जै धीरजको दलपति बनाय। सत्ताछितिमहं[३]रणको मचाय॥३॥

धरि रतन तीन तिहुँ शक्तिहाथ दश धरमकवच[४]तप टोप माथ॥
जै शुक्लध्यानकर खड्गधार। ललकारे आठौं अरि प्रचार॥४॥

तामै सबको पति मोहचण्ड। ताको ततछिन करि सहस खंड॥
फिर ज्ञान दरशप्रत्यूह[५] हान। निजगुणगढ लीनो अचलथान॥५॥

शुचि ज्ञान दरश सुख वीर्य सार। हुवे समवसरण रचना अपार॥
तित भाषे तत्त्व अनेक धार। जाकों सुनि भव्य हिये विचार॥६॥

निजरूप लह्यो आनन्दकार। भ्रम दूर करनको अति उदार॥
पुनि नयप्रमाण निक्षेपसार। दरशायो करि संशयप्रहार॥७॥

तामैं प्रमान जुग[६] भेद एव। परतक्ष परोक्ष रजै सुमेव॥
तामैं प्रतक्षके भेद दोय। पहिलो हैं संव्यवहार सोय॥८॥

ताके जुगभेद विराजमान। मति श्रुति सोहै सुन्दर महान॥
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ। है भेद जुगम ता माहिं दच्छ[७]॥९॥

---

१. गुणों में महान २. इष्ट ३. पृथ्वी पर ४. शरीर रक्षक बख्तर
५. पाप ६ युगल-दो ७. प्रवीण

इक एकदेश इक सर्व देश। इकदेश उभैविधि सहित वेश।
वर अवधि सु मनपरजै विचार। है सकलदेश केवल अपार॥१०॥

चरअचर लखत जुगपत प्रत्यक्ष। निरद्वन्दरहित परपंचपक्ष॥
पनि है परोक्षमहँ पंच भेद। स्मरिति अरु प्रत्यभिज्ञानवेद॥११॥

पुनि तर्क और अनुमान मान। आगमजुत पन[1] अब नय बखान।
नैगम संग्रह व्यवहार गूढ़। ऋजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ़॥१२॥

पुनि एवंभूत सु सप्त एव। नय कहे जिनेसुर गुन जु तेव॥
पुनि द्रव्यक्षेत्र अर काल भाव। निक्षेप चार विधि इमि जनाव॥१३॥

इनको समस्त भाष्यो विशेष। जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश॥
निज ज्ञानहेत ये मूलमंत्र। तुम भाषे श्रीजिनवर सु तंत्र[2]॥१४॥

इत्यादि तत्त्व उपदेश देय। हनि शेषकरम निर्वाण लेय॥
निरवान जजत वसु दरब ईश। 'वृन्दावन' नितप्रति नमत शीश॥१५॥

(धत्ता)

श्रेयांस जिनेशा सुगुन महेशा, वज्र धरेशा ध्यावत हैं।
हम निशदिन वंदै। पापनिकंदौ ज्यो सहजानन्द पावतु हैं॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

जो पूजै मनलाय, श्रेयनाथपदपद्मको।
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरैं॥१॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री श्रेयांसनाथजिनपूजा समाप्ता॥११॥

१. पांच २. शासन

श्री वासुपूज्य जिनपूजा

॥ स्थापना ॥

(छन्द : रूपकवित्त)

श्रीमत वासुपूज्य जिनवरपद, पूजनहेत हिये उमगाय।
थापों मन वच तन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय॥
महिष[1] चिहन पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय।
सो करुणानिधि कृपादृष्टिकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहं आय॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द जोगीरासा)

गंगाजल भरि कनक[2] कुंभमें, प्रासुक गंध मिलाई।
कर्म कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई, जिनपद पूजों मनलाई॥
वासुपूज्य वसुबूज–तनुज–पद, वासव[3] सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥जिन०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु मलयागिर चन्दन केशरसंग घसाई।
भवआताप निवारणकारण पूजों पदचित लाई॥जिन०वासु०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. भैसा
२. स्वर्ण
३. इन्द्र

देवजीर सुखदास शुद्ध वर सुवरणथाल भराई।
पुंज धरत तुम चरणन आगैं तुरित अखय पद पाई।।
जिनपद पूजों मनलाई।।
वासुपूज्य वसुबूज–तनुज–पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात[१] संतान कल्पतरु[२],—जनित सुमन बहु लाई।
मीनकेतु–मदभंजन[३] कारन, तुम पदपद्म चढ़ाई।।जिन०वासु०।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नव्य[४] गव्य[५] आदिक रसपूरित नेवज[६] तुरत उपाई।
क्षुधारोग-निरवारन कारण, तुम्हें जजौं शिरनाई।।जिन०वासु०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योत उदोत होत वर, दशदिशमें छवि छाई।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई।।जिन०वासु०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविधि गंधमनोहर लेकर, वातहोत्र[७] में ढाई।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सु धूम उड़ाई।।जिन०वासु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरस सुपक्व सुपावन फल लै, कंचनथाल भराई।
मोक्ष महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई।।जिन०वासु०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. देववृक्ष जो इन्द्र के नन्दन कानन में है
२. कल्पवृक्ष ३. कामदेव ४. नवीन
५. गोधृत ६. नैवेद्य ७. अग्नि

जलफल दरब मिलाय गाय गुण, आठों अंग नमाई।
शिवपदराजहेत हे श्रीपति! निकट धरो यह लाई॥जिन०वासु०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : चाल)

कलि[1] छट्ठ अषाढ़ सुहायो। गरभागम मंगल गायो॥
दशमें दिवितें[2] इत आये। शतइन्द्र जजे शिर नाये॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं०

कलि चौदश फागुन जानों। जनमें जगदीश महानों॥
हरि मेरु जजैं तब आई। हम पूजत हैं चितलाई॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि चौदश फागुन श्यामा[3]। धरियो तप श्री अभिरामा॥
नृप सुन्दर के पय[4] पायो। हम पूजत अतिसुख थायो॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि भादव दोइज सौहै। लहि केवल आतम जो है॥
अन्त गुणाकर स्वामी। नित वन्दौं त्रिभुवन नामी॥४॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित[5] भादव चौदशि लीनों। निरवान सुथान प्रबीनों॥
पुर चंपा थानक सेती। हम पूजत निजहित हेति॥५॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. कृष्णा २. स्वर्गसे ३. कृष्ण ४. दूध ५. शुक्ला

जयमाला

(दोहा)

चम्पापुरमें पंच वर, कल्याणक तुम पाय।
सत्तर धनु तन शोभनो, जय जय जय जिनराय॥१॥

(छन्द : मोतियादाम)

महासुखसागर आगर ज्ञान। अनन्त सुखामृतभुक्त[१] महान॥
महाबलमंडित खंडितकाम। रमाशिवसंग[२] सदा विसराम॥२॥

(पद्धरि छंद)

सुरिन्द फनिंद खगिंद नरिंद। मुनिंद जजैं नित पादारविंद[३]॥
प्रभु तुव अन्तर भाव विराग। सुबालहितैं व्रतशीलसों राग॥३॥

कियो नहिं राज उदाससरूप। सुभावन भावत आतमरूप॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त। चिदातम नित्य सुखाश्रितवस्त॥४॥

अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय। जहाँ जिय भोगत कर्मविपाय[४]॥
निजातम कै परमेसुर शर्न। नहीं इनके विन आपदहर्न॥५॥

जगत जथा जलबुदबुद येव। सदा जिय एक लहै फलभेव॥
अनेकप्रकार धरी यह देह। भ्रमे भवकानन[५] आन न नेह॥६॥

अपावन सात कुधात भरीय। चिदातम शुद्धस्वभाव धरीय॥
धरै इनसौं जब नेह तबैव। सुआवत कर्म तबै वसुभेव॥७॥

जबै तनभोगजगत्त उदास। धरै तब संजम निर्जर आस॥
करै जब कर्मकलंक विनाश। लहै तब मोक्ष महासुखराश॥८॥

तथा यह लोग नराकृत नित्त विलोकियते षटद्रव्य विचित्त॥
सु आतमजानन बोधिविहीन। धरै किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन॥९॥

---

१. भोगे २. मुक्तिरूपी लक्ष्मी के साथ ३. चरणकमल,
४. कर्मफल, ५. संसाररूपी जङ्गल।

जिनागम-ज्ञानरु संजमभाव। सबै निजज्ञान विना विरसाव॥
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल। सुभाव सबै जिहतें शिव हाल॥१०॥

लह्यो सब जोग सुपुन्य वशाय। कहो किमि दीजिय ताहि गंवाय॥
विचारत यों लौकांतिक आय। नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय॥११॥

कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार। प्रबोधि सु येम कियो जु विहार॥
तबै सौधर्मतनो हरि आय। रच्यौ शिविका[1] चढ़ि आप जिनाय॥१२॥

धरे तप पाय सुकेवलबोध। दियो उपदेश सुभव्य संबोध॥
लियो फिर मोक्ष महासुखराश। नमैं नित भक्त सोई सुखआश॥१३॥

(धत्ता)

नित वासव[2] वन्दत, पापनिकंदत, वासपूज्य व्रत ब्रह्मपति[3]॥
भवसंकटखंडित, आनन्दमंडित, जै जै जै जैवंत जती॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

वासपूज्यपदसार, जजै द्रव्यविधि भावसों॥
सो पावे सुखसार, भक्ति मुक्तिको जो परम॥१५॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री वासुपूज्यजिनपूजा समाप्ता॥१२॥

१. पालकी, २. इन्द्र, ३. कामविजयी ।

श्री विमलनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द-मदावलिप्तकपोल-मात्रा-२४)

सहस्रार दिवि[१] त्यागि, नगर कंपिला जनम लिय।
कृतधर्मानृपनन्द, मातु जयसेन धर्मप्रिय॥
तीन लोक चिरनन्द, विमल जिन विमलकर।
थापों चरनसरोज[२], जजन के हेतु भावधर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(सोरठा)

कंचनझारी धारि, पदमद्रहको नीर ले।
तृषा-रोग-निरवारि, विमल विमलगुण पूजिये॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागर करपूर, देववल्लभा[३] संग घसि।
हरि मिथ्याऽतप[४] भूर[५], विमल विमलगुण जजतु हों॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती सुखदास, श्वेत निशापतिको[६] हँसै।
पूरै वांछित आस, विमल विमलगुण जजतु ही॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मन्दार, सन्तानकसुरतरुजनित।
जजों सुमन भरि थार, विमल विमलगुण मदनहर॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. स्वर्ग २. चरणकमल। ३. केशर
४. उष्णता ५. बहुत, ६. चन्द्रमा को

नव्य–गव्य रसपूर, सुवरणथाल भरायकैं।
क्षुधा–वेदनी चूर, जजों विमलपद विमलगुण।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानिक दीप अखण्ड, गो[१]छाई वर गौ[२]दशों।
हरो मोहतम चण्ड[३], विमल विमलमतिके धनी।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर घनसार[४], देवदारु करपूर वर।
खेवों वसु अरि जार, विमल विमलपदपद्मढिग।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने।
जजों विमलपद सार, विघ्न हरैं शिवफल करै।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरव सँवार, मनसुखदायक पावने।
जजों अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद द्रुतविलंबित)

गरभ जेठवदी दशमी भनों। परम पावन सो दिन शोभनो।।
करत सेव शची[५] जननीतणी। हम जजैं पदपद्म शिरोमणी।।१।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. पृथ्वी २. दिशा ३. प्रचण्ड=तेज
४. कपूर (चन्दन) ५. इन्द्राणी

शुकलमाघ तुरी[1] तिथि जानिये। जनम मंगल तादिन मानिये॥
हरि तबै गिरिराज विषैं जजे। हम समर्चत आनन्द को सजे॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धरे सितमाघ तुरी भली। निज सुधातम ध्यावत हैं रली॥
हरि फनेश[2] नरेश जजे तहां। हम जजैं नित आनंदसों इहां॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल माघरसी[3] हनि घातिया। विमलबोध लयो सब भासिया॥
विमल अर्घ चढ़ाय जजो अबै। विमल आनन्द देहु हमें सबैं॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमर साढ़रसी[4] अति पावनों। विमल सिद्ध भये मनभावनो॥
गिरिसमेद हरी तित पूजिया। हम जजैं इत हर्ष धरें हिया॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गनन[5] चहत उड़गन[6] गगन[7], छिति[8] थितिक[9] छँह[10] जेम।
तिमि गुन बरनन[11] बरननन माहि होय तव[12] केम[13]॥१॥

---

१. चौथ २. धरणेन्द्र ३. षष्ठी। ४. आषाढ़ कृष्णाषष्ठी,
५. गिनना, ६. तारे, ७. आकाश, ८. पृथ्वी,
९. स्थिति, १०. थांह लेना-मापना,
११. वर्णन, १२. तुम्हारे, १३. कैसे,

साठधनुष तन तुंग है, हेमवरन[1] अभिराम।
वर बराह[2] पद अंक[3] लखि, पुनि पुनि करों प्रणाम॥२॥

(छन्द तोटक–वर्ण-१२)

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी। तुव ध्यावत शेष महेश मुनि॥
परमातम पूरन पाप हनो। चितचिंततदायक इष्ट धनी॥३॥

भवआतप ध्वंसन इन्दुकरं[4]। वर सार रसायन शर्मभरं॥
सब जन्मजरामृतदाह[5] हरं। शरणागतपालन नाथ वरं॥४॥

नित संत तुम्हें इन नामनितैं। चितचिंतत है गुणगामनितै[6]॥
अमलं[7] अचलं अटलं अतुलं। अरवं[8] अछलं अथलं अकुलं॥५॥

अजरं अमरं अहरं अडरं। अपरं अभरं अशरं[9] अनरं॥
अमलीन अछीन अरीर[10] हने। अमतं अगतं अरतं अघने॥६॥

अछुधा अतृषा अभयागत हो। अमदा[11] अगदां[12] अवदातम[13] हो॥
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना। अतलं अशलं[14] अनअंत गुना॥७॥

अरसं सरसं अकलं[15] सकलं। अवचं सवचं अमलं सबलं॥
इन आदि अनेकप्रकार सही। तुमको जिन संत जपैं नित ही॥८॥

अब मैं तुमरी शरना पकरी। दुख दूर करो प्रभुजी हमरी॥
हम कष्ट सहे भवकाननमें। कुनिगोद तथा थल आननमें॥९॥

तित जामनमर्न सहे जितने। कहि केम सकैं तुमसौं तितने॥
सुमुहूरत अन्तरमाहिं धरे। छह[16] त्रै त्रय छः छहकाय खरे॥१०॥

---

१. सोने जैसा रंग, २. सूकर, ३. चिह्न। ४. चन्द्रमा की किरण
५. जलन ६. गुणोंका समूह ७. निर्मल ८. परमें नहीं मिलनेवाले
९. आयुध रहित १०. कर्मशत्रु ११. मद रहित १२. रोगरहित
१३. स्वच्छ १४. शल्यरहित १५. शरीर रहित १६. ६६३३६ ।

छिति[1] वहिन[2] वयारिक[3] साधरनं[4]। लघु[5] थूल विभेदनिसों भरनं॥
प्रत्येक वनस्पति ग्यारभये। छहजार दुवादश भेद लये॥११॥

सह द्वै त्रय भू षट छःसु भया। इक इन्द्रिय की परजाय लया॥
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो। तिय इन्द्रिय साठनिमें रहियो॥१२॥

चतुरिंद्रिय चालिस देह धरा। पनइन्द्रियके चववीस वरा॥
सब ये तन धार तहाँ सहियो। दुख घोर चितारित जात हियो॥१३॥

अब मो अरदास हिये धरिये। दुखद्वंद सबै अब ही हरिये॥
मनबांछित कारज सिद्ध करो। सुखसार सबै घर ऋद्धि भरो॥१४॥

(धत्ता)

जै विमलजिनेशा, नुतनाकेशा[6], नागेशा[7] नरईश[8] सदा॥
भवतापअशेषा हरननिशेषा, दाता चिन्तित शर्म सदा॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्रीमत विमल जिनेशपद, जो पूजै मनलाय।
पूरै वांछित आश तसु, मैं पूजौं गुणगाय॥१६॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इति श्री विमलनाथ पूजा समाप्ता॥१३॥

१. पृथ्वी, २. अग्नि, ३. वायु, ४. साधारण वनस्पति
५. सूक्ष्म ६. इन्द्र, ७. धरणेन्द्र, ८. चक्रवर्ती।

श्री अनन्तनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(कवित्त छन्द)

पुष्पोत्तर तजि नगर अयोध्या, जनम लिये सूर्या–उर आय।
सिंहसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष[१] भरे जगराय॥
गुन अनंत भगवंत धरे, भवद्वंद हरे तुम हे जिनराय।
थापतु हो त्रयबार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : गीता)

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनक[२] भृंग भराइया।
मलकरम धोवन हेत मन वच, काय धार ढराइया॥
जगपूज परमपुनीत मीत[३]। अनन्त संत सुहावनो।
शिव[४]कन्तवन्त महन्त ध्यावों भ्रंत[५] तन्त नशावनो॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्द कदलीनन्द कुंकुम, दंदताप निकन्द है।
सब पाप-रुज[६] संतापभंजन, आपको लखि चंद है॥ज०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कनशाल[७] दुति उजियाल हीर[८], हिमालगुलकनितैं[९] घनी।
तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी॥ ज०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. संपूर्ण २. सोनेकी झारी, ३. मित्र, ४. मुक्ति स्त्री के पति, ५. भ्रम, ६. रोग, ७. चावल, ८. हीरेके समान उज्ज्वल, ९. बर्फसे अधिक।

पुष्कर[1] अमर[2] तरु जनित वर, अथवा अवर कर लाइया।
तुम चरण पुष्करतर धरत, सब समर[3] शूल नशाइया।।
जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनो।
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों भ्रंत तन्त नशावनो।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नैना घ्राण रसना–को प्रमोद सुदाय है।
सो त्याय चरण चढ़ाय रोग, क्षुधाय नाश कराय है।।ज०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तममोहभानन जानि आनन्द, आनि शरण गही अबै।
वर दीप धारौं वार तुमढिग, स्वपरज्ञान जु द्यो सबै।।ज०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गन्ध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्र[4]ध्वजमें खेय हों।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम बेय[5] हों।।ज०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसथक्क[6] सुभक्व[7] चक्व[8] सुहावनें मृदुपावने।
फलसारवृन्द अमन्द ऐसों, लाय पूज रचावने।।ज०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचिनीर चंदन शालिशंदन[9] सुमन चरु दीवाधरों।
अरु धूप जुत फल अर्घ करि, करजोरजुग विनती करों।।ज०।।९।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. कमल, २. कल्पवृक्ष, ३. कामदेव कृतशूल, ४. अग्नि,
५. जानना। ६. रसभरा, ७. व्यंजनविशेष, ८. मिठाई की चक्की,
९. तन्दुल।

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द : सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित)

असित-कातिक एकम भावनों। गरभको दिन सो गिन पावनों॥
किय सची तित चर्चन चावसौं। हम जजैं इत आनन्द भावसौं॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदा गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी। सकलमंगल लोकविषैं लसी॥
हरि जजे गिरिराज समाजतैं। हम जजैं इत आतमकाजतैं॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवशरीर विनश्वर भाइयो। असित जेठदुवादशि गाइयो॥
सकल इन्द्र जजे तित आइकैं। हम जजैं इत मंगल गाइकैं॥३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असितचैत अमावस को सही। परम केवलज्ञान जग्यो कही॥
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो। हम समर्चित विघ्न सबैं हरो॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चैत तुरी[1] तिथि गाइयौ। अघतघाति[2] हने शिवपाइयौ॥
गिरि समेद जजैं हरि आयकैं। हम जजैं पद प्रीति लगाईकै॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. चतुर्थी
२. पापपूर्ण घातिया कर्म

जयमाला

(दोहा)

तुम गुनवरनन येम जिम, खंडविहाय[१] करमान[२]।
तथा मेदिनी[३] पदनि करि, कीनों चहत प्रमान[४]॥१॥

जय अनन्त रवि भव्यमन, जलजवृन्द[५] विहसाय।
सुमति कोकतिय[६] थोक सुख, वृद्ध[७] कियो जिनराय॥२॥

(छन्द : चंडी तथा तामरस)

जै अनन्त गुनवन्त नमस्ते। शुद्धध्येय नितसंत नमस्ते॥
लोकालोक विलोक नमस्ते। चिन्मूरत गुणथोक नमस्ते॥३॥

रत्नत्रयधर धीर नमस्ते। करमशत्रुकरि[८] कीर[९] नमस्ते॥
च्यार अनंत महंत नमस्ते। जै जै शिवतियकंत नमस्ते॥४॥

पंचाचार विचार नमस्ते। पंचवर्णमदहार नमस्ते॥
पंच परावर्त[१०] चूर नमस्ते। पंचम[११] गति सुखपूर नमस्ते॥५॥

पंचलब्धि धरनेश नमस्ते। पंच भाव सिद्धेश नमस्ते॥
छहों दरबगुनजान नमस्ते। छहों काल पहिचान नमस्ते॥६॥

छहोंकायरक्षेश नमस्ते। छहसम्यक उपदेश नमस्ते॥
सप्तविसनवनवह्नि[१२] नमस्ते।। जय केवल अपरन्हि[१३] नमस्ते॥७॥

सप्ततत्त्वगुन भनन नमस्ते। सप्तश्वभ्र[१४] गत हनन नमस्ते॥
सप्तभंग के ईश नमस्ते। सातों नयकथनीश नमस्ते॥८॥

अष्ट करममलदल्ल नमस्ते। अष्ट जोगनिरशल्ल नमस्ते॥
अष्टम धराधिराज नमस्ते। अष्ट गुननि सिरजात नमस्ते॥९॥

---

१. आकाश, २. हाथ का पैमाना, ३. पृथ्वी ४. नापना। ५ कमलसमूह, ६ चकवी, ७ महान, ८ हाथी, ९ व्याघ्र, १० द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भाव, ११ सिद्धालय, १२ अग्नि, १३ दिन, १४ नरक।

जै नवकेवल प्राप्त नमस्ते। नव पदार्थतिथि आप्त नमस्ते॥
दशौं धरमधरतार नमस्ते। दशौं बन्धपरिहार नमस्ते॥१०॥

विघ्न-महीधर[१] बिज्रु[२] नमस्ते। जै ऊरघगति रिज्रु[३] नमस्ते॥
तनकनकं दुति पूर नमस्ते। इक्ष्वाकज[४]गनसूर नमस्ते॥११॥

धनु पचासतन उच्च नमस्ते। कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते॥
सेही अंग निशंक नमस्ते। चितचकोर मृगअंग नमस्ते॥१२॥

राग दोष मद टार नमस्ते। निजविचार दुखहार नमस्ते॥
सुर सुरेश गन बन्द नमस्ते। 'वृन्द' करो सुखकन्द नमस्ते॥१३॥

(धत्ता)

जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं, नितकृतचित हुल्लासधरं॥
आपदउद्धारं, समतागारं, वीतरागविज्ञान भरं॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द रोड़क)

जो जन मनवचकायलाय, जिन जजैं नेह धर।
वा अनुमोदन करै करावै, पढ़ै पाठ वर॥
ताके नित नव होय, सुमंगल आनन्द दाई।
अनुक्रमतै निरवान, लहै समग्री पाई॥१५॥

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री अनंतनाथ पूजा समाप्ता॥१४॥

१. पर्वत, २. बिजली, ३. रस्सी ४. इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न

श्री धर्मनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(छन्द माघवी तथा किरीट)

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानके आनि अनन्द बढ़ाये।
जगमातसुव्रत्तिके नन्दन होय, भवोदधि डूवत जंतु कढ़ाये॥
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश, है दासनिको शिवस्वर्ग मंढ़ाये।
तिनके पद पूजन हेत त्रिवार, सुथापतु हों यह फूल चढ़ाये॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : जोगीरासा मात्रा-२८)

मुनि मनसम शुचि शीर[1] नीर अति, मलय मेलि भरि झारी।
जनमजरामृत तापहरन को, चर्चो चरण तुम्हारी॥
परमधरम-शम[2]-रमन-धरम-जिन, अशरन शरन निहारी।
पूजौं पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन कदली नन्दन, दाहनिकंदन लीनों।
जलसंगघसि लसि शशिसमशमकर, भव आताप हरीनों॥परम०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जलज-जीरं[3] सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो।
पूज्ज धरत आनन्द भरत भव, द्वन्द हरत हरषायो॥परम०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. क्षीर (दूध सम) २. इन्द्रिय निग्रह ३. कमल केशर

सुमन सुमनसम सुमनथालभर, सुमनवृन्द विहसाई।
सुमनमथ[१]-मद-मंथन कारन, चरचों चरण चढ़ाई॥
परमधरम-शम-रमन-धरम-जिन, अशरन शरन निहारी।
पूजौं पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर अर्द्धचन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै॥परम०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै।
नेह सहित गाऊँ गुण श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै॥परम०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागर तर[२] दिव[३], हरिचन्दन करपूरं।
चूर खेय जलजवनमहिं जिमि, करम जरैं वसु क्रूरं॥परम०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र काम्रक[४] अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई।
सौं ले तुम ढिग धरहुँ कृपानिधि, देहु मोक्षठकुराई॥परम०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गनगाई।
बाजत दृम दृम दृम मृंदग गत, नाचत ता थेई थेई॥परम०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. कामदेव के मदको मथने के लिए ।
२ वृक्ष, ३ वन, ४ कमरख

पंचकल्याणक अर्घ

(राग टप्पा की चाल)

पूजों हों अबार[1], धरमजिनेसुर पूजों, पूजों हो। टेक।
आठैं सित वैशाखकी हो, गरभदिवस अविकार।।
जगजन वंछित पूजों, पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों।।१।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल माघ तेरस लह्यो हो, धरम धरम अवतार।
सुरपति सुरगिर पूजों, पूजों हो अबार।।धर्म०।।२।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघशुकल तेरस लह्यो हो, दुद्धर तप अविकार।
सुरऋषि सुमननि पूजों, पूजों हो अबार।।धर्म०।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पोषशुकल पूनम हने अरि, केवल, लहि भवतार।
गनसुर नरपति पूजों, पूजों हो अबार।।धर्म०।।४।।

ॐ ह्रीं पोषशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठशुकल तिथि चौथकी हो, शिव समेदतैं पाय।
जगतपूजपद पूजों, पूजों हो अबार।।धर्म०।।५।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. जल्दी--अभी।

जयमाला

(दोहा)

घनाकार[१] करि लोक पट[२], सकल उदधि[३] मसि[४] तंत।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुण अंत॥१॥

(छन्द पद्धरी मात्रा १६)

जय धरमनाथ जिन गुणमहान, तुम पदको मैं नित करों ध्यान॥
जय गरभजनम तप ज्ञानजुक्त। वर मोक्ष सुमंगल शर्म-भुक्त[५]॥२॥

जय चिदानन्द आनन्द कंद। गुनवृन्द सु ध्यावत सुनि अमंद॥
तुम जीवनि के विनु हेत मित्त। तुम ही हो जग में जिन पवित्त॥३॥

तुम समवसरण में तत्त्वसार। उपदेश दियो है अति उदार॥
ताकों जे भवि निज हेत चित्त। धारैं ते पावैं मोक्ष वित्त॥४॥

मैं तुम मुख देखत आज पर्म। पायो निजआतमरूप धर्म॥
मोकों अब भौभयतैं निकार। निरभयपद दीजे परमसार॥५॥

तुम सम मेरो जगमें न कोय। तुमहीतैं सवविधि काज होय॥
तुम दयाधुरन्धर धीर वीर। मेटो जगजन की सकल पीर[६]॥६॥

तुम नीतिनिपुन विनरागदोष। शिवमग दरशावतु हो अदोष॥
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव। जग जीव लहें शिव-दिव[७] सुराव॥७॥

तातैं मैं तुमरी शरण आय। यह अरज करतु हों शीश नाय॥
भवबाधा मेरी मेट मेट। शिवराधासों करि भेट भेट॥८॥

जंजाल जगतको चूर चूर। आनन्द अनूपम पूर पूर॥
मति देर करो सुनि अरज एव। हे दीनदयाल जिनेश देव॥९॥

---

१. लम्बाई-चौड़ाई-ऊंचाई। २. पट्टा-पाटा। ३. समुद्र।
४. स्याही। ५. आनन्द-भोगी। ६. दुःख ७. स्वर्ग

मोकौं शरणा नहि और ठौर। यह निहचै जानों सुगुन–मौर[1]॥
''वृन्दावन'' बंदत प्रीति लाय। सब विघन मेटिये धरम-राय॥१०॥

(धत्ता मात्रा ३१)

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं श्रीजिनधर्मं उपदेशा।
तुमदयाधुरंधर, विनतपुरंदर[2], कर उरमंदिर परवेशा॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द मदावलिप्त कपोल)

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल[3] मिथ्यात जजै भव।
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनन्दसमाज सब॥
सुर-नरपति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै।
'वृन्दावन' यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री धर्मनाथ पूजा समाप्ता॥१५॥

१. श्रेष्ठ गुणोंमें सर्वोपरि

२. इन्द्र

३. निकाल बाहर करना।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (मत्तगयन्द छन्द)

या भवकाननमें[१] चतुरानन[२], पापपनानन[३] घेरि हमेरी।
आतम[४] जानन मानन ठानन, बान न होइ दई सठ मेरी॥
तामद[५] भानन आपहि हो, यह छान[६] न आन[७] न आनन टेरी।
आनगही[८] शरनागतको, अब श्रीपतजी पत[९] राखहु मेरी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छंद त्रिभंगी)

हिमगिरिगतगंगा, धार अभंगा[१०], प्रासुक संगा भरि भृंगा[११]।
जन्ममृतंगा[१२] नाशि अघंगा[१३], पूजि[१४] पडंगा मृदुहिंगा[१५]॥
श्रीशान्तिजिनेशं, नुतनाकेशं[१६], वृषचक्रेशं[१७] चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं[१८], हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं[१९]॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर बावनचंदन, कदलीनंदन, घआनन्दन सहित घसों।
भवतापनिकन्दन, एरानन्दन, वंदि अमंदन[२०] चरनवसौं॥ श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. संसाररूप जङ्गल में। २. चतुर्मुख। ३. पाप को नष्ट करनेवाले।
४. आत्म को जानने, उसको समझने, उसमें स्थिर होने की आदत का न होने देना।
५. उसके मद को नष्ट करने हेतु। ६ पूर्णरूपेण छानकर।
७. दूसरा। ८. अनारकली। ९. लज्जा। १०. भंगरहित अविरल।
११ झारी। १२ जन्म, जरा, मृत्यु। १३ पाप। १४ चरणों को पूजना।
१५ कोमलता हेतु। १६ इन्द्र। १७ धर्मचक्र के स्वामी।
१८ कर्मचक्र। १९ समुद्र। २०. खूब।

हिमकर[1] कर लज्जत मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरिथारी।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत[2], भवभयभज्जत अतिभारी॥
श्रीशान्तिजिनेशं, नुतनाकेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार सरोजं कदली जोजं, पुंज भरोजं मलयभरं।
भरि कंचनथारी, तुमढिग धारी, मदन[3] विदारी, धीरधरं॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नवीने, पावन कीने, षटरसभीने सुखदाई।
मनमोदनहारे, क्षुधा विदारे, आगैं धारे गुनगाई॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे, ज्ञेय[4] विकासे सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निजभासै॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन करपूरं, करिवर चूरं, पावक भूरं, माहिजुरं।
तसु धूम उड़ावै, नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुरसुरं॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक[5] भूरं[6] ले आयो।
तासों पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निजरससज्जों उमगायो॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य सँवारी, तुमढिग धारी, आनन्दकारी दृगप्यारी[7]।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरणारी॥श्री०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. चन्द्रमा की किरण। २. उत्तम पद सजाने हेतु। ३. काम। ४. जानने योग्य।
५. निम्बु। ६. खूब। ७. आंखों को अच्छी लगने वाली।

पंचकल्याणक अर्घ

(सुन्दरी)

असित सातय भादव जानिये। गरभमंगल तादिन मानिये।
शचि कियो जननी पद चर्चनं। हम करैं इत ये पद अर्चनं॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है। सकलइन्द्र सु आगत[1] धाम है॥
गजपुरै गज साजि सबै तबै। गिरि जजैं इतमैं जजि हो अबै॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव शरीर सुभोग असार हैं। इमि विचार तबै तप धार है॥
भ्रमर चौदशि जेठ सुहावनी। धरमहेत जजों गुन पावनी॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्दश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल पौष दशै सुखराश है। परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है॥
भवसमुद्र–उधारन देवकी। हम करैं नित मंगल सेवकी॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चौदशि जेठ हनें अरी। गिरि सम्मेद थकी शिव-तिय वरी।
सकलइन्द्र जजैं तित आइकैं। हम जजैं इत मस्तक नाइकैं॥५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. आये।

जयमाला

(छन्द : रथोद्धता)

शांति शांतिगुण मंडिते सदा। जाहि ध्यावत सुपंजिते सदा॥
मैं तिन्हें भगतमंडिते[१] सदा। पूजिहों कलुषहंडिते[२] सदा॥१॥

मोक्षहेतु तुम ही दयाल हो। हे जिनेश गुनरत्नमाल हो॥
मैं अबै सुगुनदाम[३] ही धरों। ध्यावतें तुरित मुक्ति-तीया[४] वरों॥२॥

(छन्द पद्धरि ६ मात्रा)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज। भवसागरमें अद्भूत जहाज॥
तुम तजि सरवारथसिद्धिथान। सरवारथ[५] जुत गजपुर महान॥१॥

तित जनम लियो आनंद धार। हरि ततछिन आयो राजद्वार॥
इन्द्राणी जाय प्रसूतथान[६]। तुमको करमें[७] लै हरष मान॥२॥

हरि गोद देय सो मोदधार। सिर चमर अमर ढारत अपार॥
गिरिराज जाय तित शिला पांडु। तापै थाप्यौ अभिषेक मांड[८]॥३॥

तित पंचम[९] उदधि तनों सुवार[१०]। सुर कर[११] करि ल्याये उदार॥
तब इन्द्र सहसकर करि आनन्द। तुम सिर धारा ढारयौ सुनंद॥४॥

अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धध धध धध कलशशौर॥
दृमदृम दृमदृम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नूपुरंग॥५॥

तन नन नन नन नन तनन तान। घन नन नन घंटा करत ध्वान॥
ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल। जुत नाचत नावत तुमहिं भाल॥६॥

---

१ भक्तों से घिरे हुए (भक्ति से मंडित)। २ पाप नष्ट करनेवाला।
३ गुणों की माला। ४ मुक्तिस्त्री। ५ सर्वप्रयोजन सिद्धि सहित।
६ प्रसूति-गृह। ७ हाथ में। ८ मंडन। ९ क्षीर समुद्र १० जल।
११ हाथों हाथ लाना।

चट चट चट अटपट नटत नाट। झट झट झट हट नट शटविराट॥
इमि नाचत राचत भगत रंग। सुर लेत जहाँ आनन्द संग॥७॥

इत्यादि अतुल मंगल सुठाट। तित बन्यौ जहां सुरगिरि विराट॥
पुनि करि नियोग पितु सदन आय। हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय॥८॥

पुनि राजमांहि लहि चक्ररत्न। भौग्यो छ खण्ड करि धरम जत्न॥
पुनि तप धरि केवलरिद्धिपाय। भवि जीवनको शिवमग बताय॥९॥

शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश। गुनमंडित अतुल अनन्त भेष॥
मैं ध्यावतु हों नित शीश नाय हमरी भवबाधा हरि जिनाय॥१०॥

सेवक अपनों निज जान जान। करुणा करि भोभय भान भान॥
यह विघन मूल तरु खण्ड खण्ड। चितचिंतित आनंद मंड मंड॥११॥

(धत्ता)

श्रीशांति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनन्ता, भगवन्ता॥
भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनन्ता, दातारं तारनवन्ता॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द रूपक सवैया मात्रा-३१)

शांतिनाथजिनके पदपंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकें जाय पलाय॥
मनवांछित सुख पावै सो नर, बांचे भगतिभाव अति लाय।
तातें 'वृन्दावन' नित बंदै, जातैं शिवपुरराज कराय॥

॥ इत्याशीर्वाद : परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री शांतिनाथ पूजा समाप्ता॥१६॥

श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(छन्द माधवी तथा किरीट)

अजअंक[1] अजै[2] पद राजै निशंक, हरै भवशंक निशंकित दाता।
मतमत्त मतंग[3] के माथें गूँथे, मतवाले तिन्हें हनें ज्यौं हरिहाता[4]॥
गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हों रविके प्रभनन्दन श्रीमतिमाता।
सहकुंथुसुकुंथुनिके[5] प्रतिपालक, थापों तिन्हैं जुतभक्ति विख्याता॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चाल लावनी मरहठी की लाला मनसुखरायजी कृत)

कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
भवसिंधु परयो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी॥
प्रभु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
जगजाल परयो हों बेग निगारो बांह पकर मेरी॥टेक॥

सुरतरनीको[6] उज्वल जल भरि कनकभृंग भेरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरों धार नेरी[7]॥कुन्थु०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन कदलीनन्दन, घसिकर गुन टेरी।
तपत मोह नाशनके कारन, धरों चरण नेरी॥कुन्थु०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ बकरे का चिह्न। २ नहीं जीता जाने योग्य। ३ हाथी। ४ सिंह।
५ दोइन्द्रिय जीव। ६ गङ्गा नदी का। ७ नजदीक।

मुक्ताफल समउज्ज्वल अक्षत, सहित मलय लेरी।
पुंज धरों तुम चरणन आगै, अखय सुपद देरी।।
कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी वेला दीना, सुमन सुमनसेरी[१]।
समर[२] शूलनिरमूल[३] हेतु प्रभु, भेंट करों तेरी।।कुन्थु०।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बार मोदन[४] मोदक, मृदु उत्तम पेरी।
तासों चरण जजों करुणानिधि, हरो क्षुधा मेरी।।कुन्थु०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी।
सौ लै चरण जजो भ्रमतम रवि, निज सुबोध देरी।।कुन्थु०।६।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी।
अष्ट करम ततकाल जरैं ज्यों धूम धनंजेरी[५]।।कुन्थु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोंग लायची पिस्ता केला, कमरथ शुचि लेरी।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी।।कुन्थु०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु दीप लेरी।
फलजुत जजन करों मन सुख धरि, हरो जगत फेरी।।कुन्थु०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ फूलों का गुच्छा २ कामदेव ३ दुःख दूर करने
४ आनन्ददायक। ५ अग्नि।

पंचकल्याणक अर्घ

(मोतीदाम छन्द)

सुसावनकी दशमी कलि जान। जज्यो सरवारथसिद्ध विमान॥
भयो गरभागममंगल सार। जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशमी गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

महा वैशाख सु एकम शुद्ध। भयो तब जन्म तिज्ञान समृद्ध॥
कियो हरि मंगल मंदिरशीस। जजैं हम अत्र तुम्हें नुतशीस॥२॥

ॐह्रींवैशाखशुक्लाप्रतिपदिजन्ममंगलकल्याणकप्राप्तायश्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्रायअर्घं०

तज्यो षटखण्ड विभौ जिनचन्द। विमोहितचित्त चितारि सुछंद॥
धरे तप एकम शुद्ध विशाख। सुमग्न भये निज आनंद चाख॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदा तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त। चहूँ अरि छै करि ता दिन व्यक्त॥
भई समवसृत भाखि सुधर्म। जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म॥४॥

ॐ ह्रीं चेत्रशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी वैशाख सु एकम नाम। लियो तिहिं द्यौस अभै शिवधाम॥
जजे हरि हर्षित मंगल गाय। समर्चतु हौं सु हिया वच काय॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(अडिल्ल छंद)

षट खण्डन के शत्रु राजपदमें हने।
धरि दीक्षा षटखण्डन पाप तिन्हें दनें॥

त्यागि सुदरशन चक्र धरमचक्री भये।
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ गढ़ लये॥१॥

ऐसे कुन्थुजिनेशतनें पदपद्मकों।
गुण अनन्त भण्डार महासुखसदनको[१]
पूजों अरघ चढ़ाय पूरणानन्द हो।
चिदानन्द अभिनन्द इन्दगनवन्द हो॥२॥

(पद्धरी)

जय जय जय जय श्रीकुन्थुदेव। तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिंबुकेव[२]॥
जय बुद्धि विदांबर[३] विष्णु ईश। जय रमाकांत शिवलोक शीश॥३॥

जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल। जय जय जगबन्धू सुगुन माल॥
सरवारथ सिद्ध विमान छार[४]। उपजे गजपुर में गुण अपार॥४॥

सुरराज कियो गिरन्हौन जाय। आनन्द-सहित जुत-भक्ति भाय॥
पुनि पिता सौंपिकर मुदित अंग। हरि तांडव-निरत कियो अभंग॥५॥

पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल। वय पाय मनोहर प्रजापाल॥
षटखण्डविभौ भोग्यौ समस्त। फिर त्याग जोग धारयो निरस्त॥६॥

तब घाति घात केवल उपाय। उपदेश दियो सबहित जिनाय॥
जाके जानत भ्रम-तम विलाय। सम्यकदरशन निरमल लहाय॥७॥

तुम धन्य देव किरपा-निधान। अज्ञान-छपा[५]–तमहरण भान॥
जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त[६]। जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त॥८॥

जय भोभयभंजन कृत्यकृत्य। मैं तुमरो हों निज भृत्यभृत्य[७]॥
प्रभु अशरन शरन अधार धार। मम विघ्नतूलगिरि जार जार॥९॥

---

१. घर २ दिन शिव। ३ श्रेष्ठज्ञाता।
४ छोडकर। ५ रात्रि ६ सफेद शीप
७ सेवक

जय कुनय यामिनी[१] सूर सूर[२]। जय मनवंछित सुख पूर पूर॥
मम करमबंध दिढ़ चूर चूर। निजसम आनंद दै भूर भूर[३]॥१०॥

अथवा जब लौ शिव लहौं नाहिं। तऊ लों ये तो नित ही लहाहिं॥
भव भव श्रावक-कुलजनमसार। भव भव सतमत[४] धार॥११॥
भव भवनिज आतम-तत्त्व-ज्ञान। भव भव तप संजम शीलदान॥
भव भव अनुभव नित चिदानंद। भव भव तुम आगम हे जिनंद॥१२॥

भव भव समाधिजुत मरन सार। भवभव वृत चाहों अनागार[५]॥
यह मोकों हे करुणानिधान। सब जोग मिलो आगमप्रमान॥१३॥

जब लौं शिव सम्पत्ति लहों नाहिं। तबलौं मैं इनको नित लहांहि॥
यह अरज हिये अवधारि नाथ। भवसंकट हरि कीजै सनाथ॥१४॥

(धत्तानन्द मात्रा ३१)

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला।
मैं पूजों ध्यावौं शीश नमावों, देहु अचल पदकी चाला॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द रोड़क मात्रा २४)

कुन्थुजिनेश्वरपाद पदम, जो प्रानी ध्यावै।
अलि[६] सम कर अनुराग[७], सहज सो निज निधि पावै॥
जो वाँचे सरदहै[८], करै अनुमोदन पूजा।
''वृन्दावन'' तिह पुरुष सदृश, सुखिया नहि दूजा॥१६॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

इति श्री कुन्थुनाथ पूजा समाप्ता॥१७॥

---

१. रात्रि २. सूर्य ३. खूब ४. उत्तम धर्म
५. मुनिव्रत। ६. भ्रमर। ७. प्रेम ८. श्रद्धान करे।

श्री अरनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥

(छन्द : वीररस)

तप तुरंग[१] असवार धार तारन विवेक कर।
ध्यान शुक्ल असिधार[२], शुद्ध सुविचार सुबखतर॥
भावन सेना धरम दशों सेनापति थापे।
रतन तीन धर सकति[३], सकल मंत्री अनुभों निरमापे॥
सत्तातल सोहं सुभट धुनि त्याग केतु[४] शत[५] अग्र[६] धरि।
इहविध समाज सज राजकों, अरजिन जीते करम अरि॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : त्रिभंगी)

कनमनिमय[७] झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी[८] नीरभरी।
मुनिमनसम उज्वल, जनम जरा दल, सौ लै पदतल, धार करी॥
प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं[९], विरदविशालं सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं, वरभालम्॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप नशावन, विरद सु पावन, सुनि मनभावन मोद भयो।
तातैं घसि बावन, चंदन पावन, तरहिं चढ़ावन, उमगि अयो॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ घोडा, २ तलवार की धार, ३. एक अस्त्र, ४ पताका,
५ सौ ६ आगे। ७ कनक और मणिमय, ८. गंगा,
९ शत्रु समूह का काल ।

तंदुल अनियारे[1], श्वेत संवारे, शशिदुति टारे, थार भरे।
पद अखय सुदाता, जग विख्याता, लखि भवताता, पुजधरे।।
प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं, वरभालम्।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित[2] सुमन अछोभित लै आयो।
मनमथके छेदन, आप अवेदन[3], लखि निरवेदन[4], गुण गायौ।। प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक, पक्षक रक्षक[5], स्वक्ष धरी।
तुम करमनिकक्षक[6] भस्मकलक्षक दक्षक, पक्षक रक्षकरी।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम भ्रमतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजन गंजनमोहनिशा।
रविकेवलस्वामी, दीप जगामी, तुम ढीग आमी, पुन्यदृशा।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधूप सुरंगी गंधअभंगी वह्निवरंगी[7] मांहि हवै।
वसु कर्म जरावै धूमउड़ावै, तांडव भावै नृत्य पवै।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल अति पावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें।
तुम विघनविदारक, शिवफलकारक, भवदधि-तारक, चरचीनें[8]।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि स्वच्छ पटीरं[9], गन्धगहीरं, तुंदुल शीरं[10], पुष्पचरुं।।
वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं, अर्घकरं।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ सुन्दर, २ देवोंके मन मोहनेवाला, ३ वेदनरहित ४ वेदरहित(स्त्री-पुरुष-नपुंसक वेद) ५ इन्द्रिय समूह ६ नाशक नाशका ७ अग्नि ८ पूजना ९. चन्दन, १०. नोकदार।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद : चाल)

फागुन सुदी तीज सुखदाई। गरभ सुमंगल ता दिन पाई॥
मित्रादेवी उदर सु आये। जजे इन्द्र हम पूजन आये॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लातृतीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर शुद्ध चतुर्दिश सौहे। गजपुर जनम भयौ जग मोहै॥
सुरगुरु जजे मेरुपर जाई। हम इत पूजैं मनवचकाई॥२॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

मंगसिर सित चौदस दिन राजै। तादिन संजम धरै विराजै॥
अपराजित घर भोजन पाई। हम पूजै इत चित हरषाई॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रार्यां अर्घं०

कार्तिक सित द्वादसि अरि चूरे केवलज्ञान भयो गुन पूरे॥
समवसरनथिति धरम बखाने। जजत चरन हम पातक भाने॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल ग्यारस सब कर्मं। नाशि वास किय शिव-थल पर्मं॥
निहचल गुन अनन्त भण्डारी। जजों देव सुधि लेहु हमारी॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादशम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

बाहर भीतरके जिते, जाहर[१] अति दुखदाय।
ता हर कर अरजिन भये, साहर[२] शिवपुर राय॥१॥

---

१ प्रकट २ स्वामी

राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमवरन तन वरष वर, नव्वे सहस सुछाय॥२॥

(छन्द : तोटक)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी। जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी॥
भवभीमभवोदधि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥३॥

गरभादिक मंगल सार धरे। जग जीवनिके दुखदन्द हरे॥
कुरुवंशशिखामनि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥४॥

करि राज छखण्ड़ विभूतिमई। तप धारत केवलबोध ठई॥
गण तीस जहाँ भृमवारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥५॥

भविजीवनिको उपदेश दियौ। शिवहेत सबै जन धार लियो॥
जगके सब संकट टारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥६॥

कहि बीस प्ररूपनसार तहाँ। निजशर्मसुधारस धार जहाँ॥
गति चार हीषी पन प्रहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥७॥

षट काय तिजोग तिवेद मथा। पनबीस कथा वसु ज्ञान तथा॥
सुर संजमभेद पसारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥८॥

रस दशन[१] लेश्यय भव्य जुगं। षट सम्यक् सेनिय[२] भेद युगं[३]॥
जुग हार तथा सु अहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥९॥

गुनथान चतुर्दश मारगना। उपयोग दुवादश भेद भना॥
इमि बीस विभेद उचारनं हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥१०॥

इन आदि समस्त बखान कियौ। भवि जीवनने उरधार लियौ॥
कितने शिववादि[४] बधारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥११॥

फिर आप अघात विनाश सबैं। शिवधाम विषैं थित कीन तबैं॥
कृतकृत्य प्रभु जगतारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥१२॥

---

१ षट्रस या छः दर्शन २ श्रेणी ३ दो ४ मुक्तिवाद।

अब दीनदयाल दया धरिये। मम कर्म कलंक सबै हरिये॥
तुमरे गुनको कछु पार न हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥१३॥

(धत्ता)

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारण, जय जिनवर जगत्रातारं॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या)

अरजिनके पदसारं, जो पूजै द्रव्यभावसों प्रानी।
सो पावे भवरां, अजरामर मोक्षथान सुखखानी॥१५॥

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री अरनाथ पूजा समाप्ता॥१८॥

श्री मल्लिनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : रोडक)

अपराजिततैं आय नाथ मिथिलापुर जाये।
कुंभराय के नन्द, प्रजापति मात बताये॥
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजै।
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट गम ज्यों भ्रमभाजैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द : जोगीरासा)

सुर-सरिता-जल उज्ज्वल लै कर, मनि भृंगार भराई।
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहुँ चरण जिनराई॥
राग-दोष-मद-मोहकरनको तुम ही हो वरवीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरौ भवपीरा॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावनचन्दन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसायौ।
लेकर पूजौं चरणकमल प्रभु, भवआताप नशायौ॥राग०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलशशिसम उज्वल लीने दीने पुंज सुहाई।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई॥राग०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मंदार सुमन, संतानजनित महकाई।
मार सुभट मदभंजनकारन, जजहुँ तुम्हें शिरनाई॥राग०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गोंझा मोदनमोदक, आदिक सद्य[1] उपाई।
सौ लै क्षुधा निवारन कारन, जजहुँ चरन लवलाई॥
राग-दोष-मद-मोहकरनको तुम ही हो वरवीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरौ भवपीरा॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई।
तासु नाशकरनको दीपक, अद्भुतजोति जगाई॥राग०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागर चन्दन, चूरि सुगन्ध बनाई।
अष्ट करम जारनको तुम ढिग, खेवतु हौं जिनराई॥राग०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, ऐला[2] केला लाई।
मोक्ष महाफलदान जानिकै, पूजौं मन हरखाई॥राग०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजों भगति बढाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरण गही मैं आई॥राग०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(लक्ष्मीधरा)

चैतकी शुद्ध एकैं भली राजई। गर्भकल्यान कल्यानकों साजई॥
कुंभराजा प्रजापति माता तने। देवदेवी जजे शीस नाये घने॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदि गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ ताजा २ इलायची।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई। जन्म कल्यानको द्यौस सो छाजई।।
इन्द्र नागेन्द्र पूजैं गिरेन्दे जिन्हें। मैं जजों ध्यायके शीस नावों तिन्हें।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसीके दिना। राजको त्याग दीक्षा धरी है जिना।।
दान गोक्षीरको नन्दसेनें दयो। मैं जजो जासुके पाद चर्ये भयो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लेकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

पौषकी श्यामदूती हने घातिया। केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मी लिया।।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं। मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री[1] टरैं।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

फाल्गुनी सेत पांचै अघाती हतै। सिद्ध आलै[2] बसे जाय सम्मेदते।।
इन्द्रनागेन्द्र कीन्हीं क्रिया आयकें। मैं जजों सो मही ध्यायकें गायके।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(धत्तानन्द छन्द)

तुम नमित सुरेशा, नर नागेशा[3], जजत गनेशा, भगतिभरा।।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिवरमनिवरा।।१।।

(पद्धरि छन्द)

जय शुद्ध चिदातम देव एव। निरदोष सुगुन यह सहज टेव।।
जय भ्रमतमभंजन मारतंड[4]। भविभवदधितारनको तरंड[5]।।२।।

जय गरभजनम-मंडित जिनेश। जय क्षायक समकित बुद्ध भेश।।
चौथे किन सात प्रकृति छीन। चौ अनन्तानु मिथ्यात तीन।।३।।

सातंय किय तीनों आयु नाश। फिर नवं अंश नवमें विलास।।
तिनमांहि प्रकृत छत्तीस चूर। या भांति कियौ तुम ज्ञानपूर।।४।।

---

१. टेढे, २. स्थल, ३. इन्द्र, ४. सूर्य, ५. नाव।

पहिले महँ सोलह कहँ प्रजाल। निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल।।
हनि थानगृद्धिकों सकल कुब्ज। नर तिर्यग्गति गत्यानुपुब्ब।।५।।

इक बे ते चौ इन्द्रीय जात। थावर आतप उद्योत घात।।
सूक्षम साधारण एम चूर। पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर।।६।।

चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार। तीजे सु नपुंसकवेद टार।।
चौथे तियवेद विनाश कीन। पाँचैं हास्यादिक छहों छीन।।७।।

नरवेद छटें छय नियत धीर। सातयें संज्वलन क्रोध चीर।।
आठवें संज्वलन मानभान। नवमें माया संज्वलनहान।।८।।

इमि घात नवें दशमें पधार। संज्वलन लोभ तित हू विदार।।
पुनि द्वादशकेद्वयअंशमांहि। सोलह चकचूर कियो जिनाहिं।।९।।

निद्रा प्रचला इकभागमाहिं। दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं।।
ज्ञानावरनी पन दरश चार। अरि अन्तराय पांचों प्रहार।।१०।।

इमि क्षय त्रेसठ केवल उपाय। धरमोपदेश दीन्हों जिनाय।।
नवरकेवललब्धि विराजमान। जय तेरमगुनथिति गुन अमान।।११।।

गत चौदहमें द्वै भाग तत्र। छय कीन बहत्तर तेरहत्र।।
वेदनी असाताको विनाश। औदारि विक्रियाहार नाश।।१२।।

तैजस्यकारमानों मिलाय। तन पंचपंचबन्धन विलाय।।
संघात पंच घाते महंत। त्रय आंगोपांग सहित भनंत।।१३।।

संठान संहनन छह छहेव। रसवरन पंच वसु फरस भेव।।
जुगगन्ध देवगति सहित पुव्व। पुनि अगुरु लघू उस्वास दुव्व।।१४।।

परउपघातक सुविहाय नाम। जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम।।
अपरज थिर अथिर अशुभसुमेव। दुरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव।।१५।।

अनआदर और अजस्य कित्त। निरमान नीत गोतौ विचित्त।।
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय। तब दूजेमें तेरह नशाय।।१६।।

पहले सातावेदनी जाय। नरआयु मनुषगतिको नशाय॥
मानुषगत्यानु सु पूरवीय। पञ्चेन्द्रिय जात प्रकृति विधीय॥१७॥

त्रसबादर परजापति सुभाग। आदरजुत उत्तम गोतपाग॥
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त। ए तेरह क्षय करि भये मुक्त॥१८॥

जय गुन अनन्त अविकार धार। वरनत गनधर नहिं लहत पार॥
ताकौं मैं बन्दौं बारबार। मेरी आपद उद्धार धार॥१९॥

सम्मेदशैल सुरपति नमन्त। तव मुक्तथान अनुपम लसन्त॥
'वृन्दावन' वन्दत प्रीतलाय। मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय॥२०॥

(धत्ता)

जय जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, मल्ल विमलकल्यान करा॥
भवद्वन्द्वविदारन आनन्दकारन, भविकुमोदनिशिईश वरा॥२१॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(शिखरिणी)

जजे हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों।
करै नानाभांती भगति थुति औ नौति[1] सुधिसौं॥
लहैं शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको।
तथा मोक्षं जावै जजत जन जो मल्लिजिनको॥२२॥

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री मल्लिनाथ पूजा समाप्ता॥१९॥

१ नमस्कार

श्री मुनिसुव्रत जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥(मत्तगयन्द)

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुनवान महापदमा जसु माई॥
बीस धनू तनु श्याम छवी, कुछ अंक हरी वरवंश बताई।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभु कहँ, थापतु हौं इत प्रीति लगाई॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(गीतिका)

उज्वल सुजल जिमि जस तिहारो, कनक झारीमें भरों।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करों।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगन माल है।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों।
गुनगाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबै हरों॥शिव०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल अखण्डित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरों।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानिपद पूजा करों॥शिव०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करों॥शिव०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरों।
सो लेय तुम पद तर धरत ही, क्षुधा डाइनको हरों।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगन माल है।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावनघृत भरों।
सो तिमिरमोहविनाश आतमभाव कारन ज्वै धरों।।शिव०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर चन्दन चूरभूर, सुगन्ध पावकमें धरों।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निजसुखकों भरों।।शिव०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अनार सु आम आदिक, पक्वफल अति विस्तरों।
सो मोक्षफलके हेत लेकर, तुम चरन आगे धरों।।शिव०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलगन्ध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों।
पूजों चरणरज भक्तिजुत, जाते जगत सागर तरों।।शिव०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(त्रोटक)

तिथि दोयज सावन श्याम भयो। गरभागममंगल मोद थयो।।
हरिवृन्द सची पितुमात जजे। हम पूजत ज्यों अघओघ[1] भजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ पाप का समूह

वयसाख वदी दशमी वरनी। जनमें तिहि द्यौस[1] त्रिलोकधनी॥
सुरमंदिर ध्याय पुरन्दरने[2]। मुनिसुव्रतनाथ हमें शरने॥२॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो। वयसाख वदी दशमी कहियो॥
निरुपाधि[3] समाधि सुध्यावत हैं। हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वरकेवलज्ञान उद्योत किया। नवमी वयसाखवदी सुखिया॥
धनि मोहनिशाभनि मोखमगा। हम पूजि चहैं भवसिंधु थगा॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि बारस फागुन मोक्ष गये। तिहुँलोक शिरोमणि सिद्ध भये॥
सु अनन्त गुनाकर विघन हरी। हम पूजत हैं मनमोद भरी॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुणिगणनायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकर युक्त।
भुक्तमुक्त दातार लखि, बन्दों तनमनउक्त॥१॥

(त्रोटक)

जय केवलभाव अमान घरं। मुनिस्वच्छसरोज विकासकरं॥
भवसंकट भंजनलायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥२॥

---

१ दिन २ इन्द्र ३ उपाधिरहित

घनघातव नन्दवदीप्त भनं। भविबोधतृषातुरमेघघनं॥
नितमंगलवृन्द वधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥३॥

गरभादिक मंगलसार धरे। जगजीवन के दुखद्वन्द हरे॥
सब तत्त्वप्रकाशन वायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥४॥

शिवमारगमण्डन तत्त्वकह्यो। गुनसार जगत्त्रय शर्म लह्यो॥
रुज[१]रागरु दोष मिटायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥५॥

समवस्रत में सुरनार सही। गुण गावत नावत भालमही॥
अरु नाचत भक्ति बढ़ायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥६॥

पगनूपुरकी धुनि होत भनं। झननं झननं झननं झननं॥
सुरलेत अनेक रमायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥७॥

घननं घननं घन घंट बजैं। तननं तननं तनतान सजैं॥
द्रिमद्रिम मिरदंग बजायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥८॥

छिनमें लघु औ छिन थूल बनें। जुत हावविभाव विलासपनें॥
मुखतें पुनि यो गुणगायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥९॥

धृगतां धृगतां पगपावत हैं। सननं सननं सु नचावत हैं॥
अति आनन्दको पुनि पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥१०॥

अपने भवको फल लेत सही। शुभ भावनतें सब पाप दही॥
तित ते सुखको सब पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥११॥

इन आदि समाज अनेक तहाँ। कहि कौन सकै जु विभेद यहाँ॥
धन श्रीजिनचन्द सुधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥१२॥

पुनि देशविहार कियौ जिनने। वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने।
हमको तुमरी शरणायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥१३॥

---

१. द्वेष

हमपै करुणा करि देव अबैं। शिवराज समाज सुदेहु सबैं॥
जिमि होहुँ सुखाश्रमनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥१४॥

भवि वृन्दतनी विनती जु यही। मुझ देहु अखैपद राज सही॥
हम आनि गही शरणायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥१५॥

(धत्ता)

जय गुणगणधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती॥
परमानन्ददायक, दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवन्त जती॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्रीमुनिसुव्रत के चरण, जो पूजै अभिनन्द॥
सो सुर सुरनर सुख भोगिकें, पावै सहजानन्द॥१७॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इति श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा समाप्ता॥२०॥

श्री नमिनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (रोडक)

श्रीनमिनाथजिनेन्द्र नमों विजया रथनन्दन।
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन॥
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन।
तिन्हें सु थापों यहाँ त्रिधाकरिके पदबन्दन॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(द्रुतविलम्बित)

सुरनदीजल उज्वल पावनं, कनक भृंगभरों मनभावनं॥
जजतु हैं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिमलै मिलि केशरसों घसों। जगतनाथ भवातपको नसों॥
जजतुहौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायके॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलकके सम सुन्दर तंदुलं। धरत पुंजसु भुंजत संकुलं॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकि बेलि सुहावनी। समरसूल समस्त नशावनी॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि सुधासम मोदक मोदनं। प्रबल दुष्ट क्षुधामद खोदनं॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि धृताश्रित दीपक जोइया। असममोह महातम खोइया॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अमरचिह्नविषैं दशगंधकों। दहत दाहत कर्म कबंधको॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायके॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलसुपक्व मनोहर पावने। सकल विघ्नसमूह नशावने॥
जजतु हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादि मिलाय मनोहरं। अरघ धारत ही भय भौ हरं॥
जजतु हौ नमिके गुनगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(चाल छन्द)

गरभागम मंगलधारा। जुग आश्विन श्याम उदारा॥
हरिहर्षि जजे पितुमाता। हम पूजें त्रिभुवन त्राता॥१॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमोत्सव श्याम अषाढ़ा। दशमीदिन आनन्द बाढ़ा॥
हरि मन्दर पूजे जाई। हम पूजें मनवचकाई॥२॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

तपदुद्धर श्रीधर धारा। दशमीकलि षाढ़ उदारा॥
निज आतमरसझर लायौ। हम पूजत आनन्द पायौ॥३॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित मंगसिरग्यारस चूरे। चवघाति भये गुनपूरे॥
समवसृत केवलधारी। तुमको नित नौति हमारी॥४॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

वयशाख चतुर्दशि श्यामा। हनि शेष वरी शिववामा॥
सम्मेदथकी भगवंता। हम पूजैं सुगुन अनन्ता॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

आयु सहस दश वर्ष की, हेमवरन तनसार।
धनुष पंचदश तुंग तन, महिमा अपरम्पार॥१॥

(चौपाई)

जै जै जै नमिनाथ कृपाला। अरिकुलगहनदहनदवज्वाला॥
जै जै धरमपयोधर धीरा। जय भवभंजन गुनगंभीरा॥२॥

जै जै परमानन्द गुणधारी। विश्वविलोकन जन हितकारी॥
अशरन शरन उदार जिनेशा। जै जै समवसरन आवेशा॥३॥

जै जै केवलज्ञान प्रकाशी। जै चतुरानन हनि भवफांसी॥
जै त्रिभुवनहित उद्यमवंता। जै जै जै जै नमि भगवंता॥४॥

जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो। तासु सुनत भविनिजरस पायो॥
एक शुद्ध अनुभवनिज भाखे। दोविधि राग दोष क्षय आखे॥५॥

द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्मं। दो प्रमाण आगमगुण शर्मं॥
तीनलोक त्रयजोग त्रिकालं। सल्ल पल्ल त्रय बात बलालं॥६॥

चार बंध संज्ञागति ध्यानं। आराधन निक्षेप चउ दानं॥
पंचलब्धि आचार प्रमादं। बंधहेतु पैताले सादं॥७॥

गोलक पंचभाव शिव भौनैं। छहों दरब सम्यक् अनुकौनें॥
हानिवृद्धि तप समय समेता। सप्तभंगवानीके नेता॥८॥

संजम समुद्घात भय सारा। आठ करम मद सिध गुनधारा॥
नवों लब्धि नवतत्त्वप्रकाशे। नोकषाय हरि तूप हुलाशे॥९॥
दशों बन्धके मूल नशाये। यों इन आदि सकल दरशाये॥
फेर विहरि जगजन उद्धारे। जै जै ज्ञान दरश अविकारे॥१०॥
जै वीरज जै सूच्छमवन्ता। जै अवगाहन गुन वरनन्ता॥
जै जै अगुरुलघु निरबाधा। इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा॥११॥
ताकौं कहत थके गनधारी। तौ को समरथ कहै प्रचारी॥
तातें में अब शरणैं आया। भवदुःख मेटि देहु शिवराया॥१२॥
बारबार यह अरज हमारी। हे त्रिपुरारी हे शिवकारी॥
परपरिणतिको वेगि मिटावो। सहजानन्द सरूप मिटावो॥१३॥
'वृन्दावन' जांचत शिरनाई। तुम मम उर निवसौ जिनराई॥
जबलों शिव नहि पावों सारा। तबलों यही मनोरथ म्हारा॥१४॥

(धत्ता)

जय जय नमिनाथं, हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं॥
तातें शिरनायो, भगति बढायौ, चिहन चिहन शतपत्र पदं॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्री नमिनाथतने जुगल, चरन जजैं जो जीव॥
सो सुरनरसुख भोग वर, होवैं शिवतिय पीव॥१६॥

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री नमिनाथ जिनपूजा समाप्ता॥२१॥

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द लक्ष्मी तथा अर्द्धलक्ष्मीधरा)

जैति जे जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यो[१] चैनकी[२]।
श्री शिवानंद भोफँद[३] निःकंदकी[४], ध्यावै जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी[५]॥
परमकल्याण के देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौ ऐनकी[६]।
थापि हों वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धता धार भौपारकू[७] लेनकी॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

(चाल होली)

दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता०॥टेक॥
निगमनदी कुश[८] प्रासुक लीनौ, कंचनभृंग भराय॥
मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय।
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय॥दाता०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय।
विघन ताप नाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय॥दाता०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यराशि तुम जस सम उज्वल, तंदुल शुद्ध मंगाय।
अखय सौख्य भोगनके कारन, पुंज धरों गुनगाय॥दाता०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ शिव(मुक्ति) २ आनन्दकी ३ संसारके बन्धन
४ हननेवाले ५ कामदेव ६ पूजा ७ संसारसे पार होनेके लिए
८ जल

पुण्डरीक तृण द्रुमको आदिक, सुमन सुगन्धितलाय।
दर्प्पक[1] मनमथ[2] भंजनकारन, जजहुँ चरण लवलाय।
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय।।दाता०।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुँ चरण उमगाय।।दाता०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्वल जोति जगाय।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजहुँ चरण हुलसाय।।दाता०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविध गंध बनाय मनोहर, गुञ्जत अलिगन[3] आय।
दशोंबन्ध जारनके कारन, खेवों तुमढिग लाय।।दाता०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरसवरन रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्ष महाफल कारण पूजों, हे जिनवर तुम पाय।।दाता०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छितिके राज करनकों, जजों अंग वसुनाय।।दाता०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(चाल)

सित कातिक छट्ठ अमन्दा। गरभागम आनन्दकन्दा।।
शचि सेय सिवापद आई। हम पूजत मनवचकाई।।१।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

१ घमण्डी २ कामदेव ३ भौंरे

सित सावन छट्ठ अमन्दा। जनमें त्रिभुवन के चन्दा॥
पितु समुद महासुख पायो। हम पूजत विघन नशायो॥२॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठयां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तजि राजमती व्रत लीनों। सित सावन छट्ठ प्रवीनों॥
शिवनारि तबै हरषाई। हम पूजैं पद शिरनाई॥३॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठयां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित आश्विन एकम चूरे। चारों घाती अति क्रुरे॥
लहि केवल महिमा सारा। हम पूजैं अष्टप्रकारा॥४॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदि केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सितसाढ अष्टमी चूरे। चारों अघातिया कूरे॥
शिव ऊर्ज्जयंततें पाई। हम पूजैं ध्यान लगाई॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्याम छवी तन चाप[1] दश, उन्नत गुणनिधिधाम।
शंख चिह्नपदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रणाम॥१॥

(पद्धरी)

जै जै जै नेमि जिनिंद चन्द। पितु समुद देन आनन्दकन्द॥
शिवमात कुमुद मन मोददाय। भविवृन्द चकोर सुखी कराय॥२॥

१ धनुष

जय देव अपूरव मारतंड[१]। तुम कीन ब्रह्मसुत[२] सहस खण्ड॥
शिवतियमुखजलज[३] विकासनेश। नहिं रहयो सृष्टि में तम अशेष॥३॥

भवभीत कोक[४] कीनों अशोक। शिवमग दरशायो शर्मथोक॥
जै जै जै जै तुम गुनगम्भीर। तुम आगम निपुण पुनीत धीर॥४॥

तुम केवलजोति विराजमान। जै जै जै जै करुणानिधान॥
तुम समवसरणमें तत्त्वभेद। दरशायो जातैं नशत खेद॥५॥

तित तुमको हरि आनन्दधार। पूजत भक्तिजुत बहु प्रकार॥
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय। जै बल अनन्त गुनवंतराय॥६॥

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश। जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष॥
जय कुमतिमतंगनको[५] मृगेन्द्र। जय मदनध्वांतको रवि जिनेन्द्र॥७॥

जय कृपासिन्धु अविरुद्ध बुद्ध। जय रिद्धिसिद्धि दाता प्रबुद्ध॥
जय जगजनमनरंजन महान। जय भवसागर महँ सुष्टु यान[६]॥८॥

तव भक्ति करै ते धन्य जीव। ते पावैं दिव शिवपद सदीव॥
तुमरो गुन देव विविध प्रकार। गावत नित किन्नर की जु नार॥९॥

वर भक्ति माहिं लवलीन होय। नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय॥
तुम करुणासागर सृष्टिपाल। अब मोको बेगि करो निहाल॥१०॥

मैं दुःख अनन्त वसुकरम[७] जोग। भोगे सदीव नहिं और रोग॥
तुमको जगमें जान्यो दयाल। हो वीतराग गुनरतनमाल॥११॥

तातें शरणा अब गही आय। प्रभु करो वेगि मेरी सहाय॥
यह विधन करम मम खंडखंड। मनवांछितकारज मंडमंड॥१२॥

संसारकष्ट चकचूर चूर। सहजानन्द मम उर पूर पूर॥
निज पर प्रकाशबुधि देह देह। तजिके विलंब सुधि लेह लेह॥१३॥

---

१ सूर्य २ कामदेव ३ मुक्ति-स्त्रीका मुख कमल
४ चकवा ५ कुमतिरूपी हाथी ६ सवारी(वाहन) ७ अष्टकर्म

हम याचत है यह बार बार। भवसागरतें मो तार तार।।
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख। तातैं विनवों हे सुगुनमुक्ख।।१४।।

(धत्ता)

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं।।
भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं, धर्माधारं।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी)

सुख धन यश सिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि।
सरल मनसि[1] सिद्धि होतु है ताहि ऋद्धि।।
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी[2]।
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्षनारी।।१६।।

।। इत्याशीर्वाद : परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

इति श्री नेमिनाथ पूजा समाप्ता।।२२।।

१ मनकी २ गृहस्थी

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (छन्द : सवैया)

(कवित्त छंद)

प्राणतदेवलोकतें आये, वामादे उर जगदाधार।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरितन सुखदातार॥
जरतनाग जुगबोधि दियो जिहिं, भुवनेसुर[१] पद परमउदार।
ऐसे पारस को तजि आरस[२], थापि सुधारस हेत विचार॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(प्रमिताक्षर)

सुरदीरघकंचनकुम्भ भरौं। तव पादपद्मतर[३] धार करों॥
सुखदाय पाय यह सेवत हौं। प्रभुपार्श्व सार्श्व गुण बेवत हौं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगंध कुंकुम कर्पूर घसों। हरि चिहन हेरि अरचों सुरसों॥सु०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हिम हीर नीरजसमान शुचं। वर तंदुलपुञ्ज तवाग्र मुचं॥सु०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमलादिपुष्प धनुपुष्प धरी। मदभञ्जहेत ढिग पुञ्ज करी॥सु०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु नव्यगव्य[४] रससार करों। धरि पादपद्मतर मोद भरों॥सु०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ धरणेन्द्र २ आरस-आलस्य ३. चरणकमलके नीचे ४. नया धृत,

मनिदीप जोत जगमग्ग मई। तव पादकंज तर वार दई।।
सुखदाय पाय यह सेवत हौं। प्रभुपार्श्व सार्श्व गुण बेवत हौं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध खेय मन नाचत है। वहु धूमधूममिसि नाचत है।।सु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलपक्व शुद्ध रस जुक्त लिया। पदकंज पूजत हैं खोलिहिया।।सु०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलआदि साजि सब द्रव्य लिया। कनथार[1] धार नुतनृत्य किया।।सु०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(त्रोटक)

पक्ष वैशाखकी श्याम दुतिया भनो। गर्भकल्याणको द्यौस[2] सोही गनों।।
देवदेवेन्द्र श्रीमातु सेवै सदा। मैं जजों नित्य ज्यो विघ्न होवे बिदा।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

पौषकी श्याम एकादशीकों स्वजी। जन्म लीनों जगन्नाथ धर्मध्वजी।
नाग नागेन्द्र नागेन्द्र[3] पै पूजिया। में जजों ध्यायके भक्ति धारों हिया।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

कृष्णएकादशी पौषकी पावनी। राजको त्याग वैराग धार्यो बनी।।
ध्यानचिद्रूपको ध्याय साता मई। आपको मैं जजों भक्ति भावें लई।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. स्वर्णथाल, २. दिवस, ३. सुमेरु पर्वत ।

चैत की चौथि श्यामा महा भावनी। ता दिना घातिया घाति शोभा बनी।
बाह्य आभ्यंन्तरें छन्द लक्ष्मीधरा। जैति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमी शुद्ध शौभे महासावनी। तादिना मोक्षपायो महापावनी[1]।
शेल सम्मेदतें सिद्धराजा भये। आपको पूजतें सिद्धकाजा ठ्ये।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पार्श्व पर्म गुनराश है, पाश कर्म–हरतार।
पाश शर्म [2]निजवास द्यो, पाश धर्म धरतार।।१।।

नगर बनारसि जन्मलिय, वंश इक्ष्वाकु महान।
आयु वरष शततुंग तन, हस्त सुनौ परमान।।२।।

(पद्धरी)

जय श्रीधर[3] श्रीकर श्रीजिनेश। तुव गुणगण फणि[4] गावत अशेष।।
जय जय जय आनन्दकन्द चन्द। जय जय भवपंकजको दिनन्द।।३।।

जय जय शिवतियवल्लभ महेश। तुव ब्रह्मा शिव शंकर गणेश।।
जय स्वच्छचिदंग अनंगजीत[5]। तुव ध्यावत मुनिगन सुहृदमीत।।४।।

जय गरभागममंडित महंत। जगजनमनमोदन परम संत।।
जय जनममहोत्सव सुखदधार। भविसारंगको[6] जलधर उदार।।५।।

हरिगिरिवर पर अभिषेक कीन। झट तांडव निरत अरंभ दीन।।
बाजन बाजत अनहद अपार। को पार लहत वरनत अबार।।६।।

---

१ पवित्र २ सुख ३ लक्ष्मी को धारण करनेवाला ४ नागेन्द्र ५ कामदेव को जीतनेवाले ६. मोर,

दृमदृम दृमदृम दृमदृम मृदंग। घननन ननन घंटा अभंग॥
छमछम छमछम छम छुद्रघंट। टमटम टमटम टंकोर तंट॥७॥

झननन झननन नूपुर झंकोर। तननन तननन नन तानशोर॥
सननन ननननन गगनमांहिं। फिर फिरफिरफिरफिरकी लहांहिं॥८॥

ताथेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव। चटपट अटपट झट त्रिदशराव॥
करिकें सहस्र करको पसार। बहुभांति दिखावत भाव प्यार॥९॥

निजभक्ति प्रगट जित करत इन्द्र। ताकों क्या कहिं सकि है कविंद्र॥
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म। अरु सभा ईश तुम देश शर्म॥१०॥

अरु नाचत मघवा[१] भक्तिरूप। बाजे किन्नर बज्रत अनूप॥
सो देखत ही छवि बनत वृन्द। मुखसों कैसे बरनै अमंद॥११॥

धनघड़ी सोय धन देव आप। धन तीर्थंकर प्रकृति प्रताप॥
हम तुमको देखत नयनद्वार। मनु आज भये भवसिंधु पार॥१२॥

पुनिपिता सौंपि हरि स्वर्ग जाय। तुम सुख समाज भोग्यौ जिनाय॥
फिर तपधरि केवलज्ञान पाय। धरमोपदेश दे शिवसिधाय॥१३॥

हम शरणागत आये अबार। हे कृपासिंधु गुन अमलधार॥
मों मनमें तिष्ठहु सदाकाल। जबलौं न लहों शिवपुररसाल॥१४॥

निरवान थान सम्मेद जाय। 'वृन्दावन' बंदत शीशनाय॥
तुम ही हो सह दुखद्वन्द हर्न। तातें पकरी यह चर्णशर्ण॥१५॥

(धत्ता)

जय जय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर पार्श्वपती॥
''वृन्दावन'' ध्यावत, पूज रचावत, शिवथल पावत, शर्म अती॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. इन्द्र

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्रसमान।
सुखसागरवर्द्धनको शशिसम, दवकषायको मेघमहान॥
तिनकों पूजें जो भविप्राणी, पाठ पढ़ै अति आनन्द आन।
सो पावै मनवांछित सुख सब, और लहै अनुक्रम निरवान॥१७॥

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

इति श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा समाप्ता॥२३॥

श्री वर्द्धमान जिनपूजा

॥ **स्थापना** ॥ (मत्तगयन्द)

श्रीमत वीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई।
केहरिअंक[१] अरीकरदंक[२], नये[३] हरिपंकतिमौलि[४] सुआई॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधनधारक देव, इहा अव तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग[५] भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति[६]नायक हो।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन सार, केसर संग घसौं।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलसित[७] शशिसम[८] शुद्ध, लीनो थार भरी।
तसु पुंज धरो अविरुद्ध[९], पावो शिवनगरी॥श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ सिंह का चिह्न २ चार घातिया कर्मरूप वैरी को नष्ट करनेवाले
३ झुके ४ इन्द्रों के मस्तकों की पंक्ति ५ कलश(झारी),
६. अच्छी बुद्धि देनेवाले, ७. सफेद चावल, ८. चन्द्रमाके समान,
९. सामने,

सुरतरु के सुमन[1] समेत सुमन सुमनप्यारे[2]।
सो मनमथभंजनहेत[3], पूजों पद थारे॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिनायक हो॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसरञ्जत[4] सज्जत[5] सद्य[6], मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखण्डित मण्डित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरा।
शिव फलहित हे जिनराय, तुमढिग भेंट धरा॥श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों॥श्री०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. फूल, २. मनको भानेवाले, ३. कामदेवको नष्ट करनेके लिए,
४. रससे रंजायमान, ५. सजे हुए, ६. तुरन्त बने हुए।

पंचकल्याणक अर्घ

मोहि राखो हो, शरणा, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो०।।
गरभ साढ़सित छट्ठ लियो थिति, त्रिशला उर अघ हरना।।
सुर सुरपति तित सेव करयो नित, मैं पूजो भवतरना।। मोहि०।।१।।

ॐ ह्रीं अषाढशुक्लाषष्ठयां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैत सित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना[१]।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना।।मोहि०।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना।।मोहि०।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकलदशै वैशाखदिवस अरि, घात चतुक क्षयकरना।
केवललहि भवि भवसरतारे[२], जजों चरण सुख भरना।।मोहि०।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें परना[३]।
गनफनिवृन्द[४] जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना।।मोहि०।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. पैदा हुए (कुण्डलपुरके कणका वरन किया), २. संसार समुद्र से तारे, ३. वरी, ४. नागकुमारोंका समूह

जयमाला

(हरिगीता २८ मात्रा)

गनधर असनिधर[1], चक्रधर, हरधर, गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा॥
दुखहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल है।
सुकुमाल गुणमणिमाल उन्नत, भाल की जयमाल है॥१॥

(धत्ता)

जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवंदन जगदानन्दन, चन्दवरं।
भवतापनिकन्दन, तनकनमंदन, रहित सपंदन, नयनधरं॥२॥

(तोटक)

जय केवलभानु कलासदनं[2]। भविकोक[3] विकासन कंजबनं[4]॥
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञानदृगांवर चूरकरं॥१॥

गर्भादिक मंगलमंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो॥
जगमांहि तुम्हीं सत पंडित हो। तुम ही भवभावविहंडित हो॥२॥

हरिवंशसरोजनको रवि हो। बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो॥
लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ। अबलौ[5] सोइ मारग राजति[6] यौ॥३॥

पुनि आप तने गुणमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही॥
तिनकी वनिता गुन गावत हैं। लय माननिसों मन भावत हैं॥४॥

पुनि नाचत रंग उमंग भरी। तुव भक्ति विषै पग येम[7] धरी॥
झननं झननं झननं झननं। सुरलेत तहां तननं तननं॥५॥

घननं धननं घनघंट बजे। दृमदृं दृंमदृं मिरदंग सजै॥
गगनांगनगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥

---

१. अस्त्र (वज्र)को धरनेवाला इन्द्र, २. घर, ३. चकवा, ४. कमलवन, ५. अबतक, ६. चल रहा है, ७. इस प्रकार।

धृगतां धृगतां गति वाजत है। सुरताल रसालजु छाजत है।।
सननं सननं सननं नभमें इकरूप अनेक जु धारि भमें।।७।।

केइ नारिसु वीन बजावति हैं। तुमरो जस उज्वल गावति हैं।।
करतालविषैं कर ताल धरें। सुरताल विशाल जु नाद करें।।८।।

इन आदि अनेक उछाहभरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।।
तुमही जगजीवनिके पितु हो। तुमही विनकारनतैं हितु हौ।।९।।

तुमही सह विघनविनाशन हौ। तुमही निज आनन्द भासन हो।।
तुमही चितचिन्ततदायक हौ। जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हौ।।१०।।

तुमरे पनमंगलमाहिं सही। जिय उत्तम पुण्य लह्यो सब ही।।
हमको तुमरी शरणागत है। तुमरे गुनमें मन पागत है।।११।

प्रभु मो हिय आप सदा बसिये। जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।।
तबलों तुम ध्यान हिये बरतों। तबलों श्रुतचिन्तन चित्त रतों।।१२।।

तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभ भाव सुहागतु हों।।
तबलों सतसंगति नित्त रहौ। तबलों मम संजम चित्त गहौ।।१३।।

जबलौं नहि नाश करों अरिकों। शिवनारि वरों समता धरिकों।।
यह द्यौ तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु है इतनी सुनजी।।१४।।

(धत्ता)

श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भक्तिभरा।।
''वृन्दावन'' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा।।१५।।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्रीसन्मति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत।
''वृन्दावन'' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत।।१६।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

इति श्री वर्द्धमान जिनपूजा समाप्ता।।२४।।

श्री समुच्चय अर्घ

सुनियो जिन राज त्रिलोक धनी। तुममें जितने गुन हैं तितनी।।
कहि कौन सकै मुखसों सब ही। तिहिं पूजतु हों गहि अर्घ यही।।१।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यः चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ देवको आदि अन्त, श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार।
तिनके चरणकमलको पूजै, जो प्राणी गुणमाल उचार।।
ताके पुत्र मित्र धन योवन, सुखसमाजगुन मिलै अपार।
सुरपदभोग भोगी चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार।।२।।

इत्याशीर्वादः।

।। कवि नामग्रामादि परिचय।।

काशीजी में काशीनाथ नन्हूँजी, अनंतराम, मूलचन्द आढतसुराम आदि जानियौ।
सज्जन अनेक तहाँ धर्मचन्दजी तो नन्द, वृन्दावन अग्रवाल गोल गोती जानियौ।।
तानें रचे पाठ पाय मन्नालालको सहाय, बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियौ।
यामें भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो, मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उर आनियो।

।। इति श्री कविवरवृन्दावनकृत
श्री वर्तमानजिनचतुर्विंशति जिनपूजा समाप्ता।।

संवत् १८७५ कार्तिक कृष्णा १५ गुरुवार को यह पुस्तक पूर्ण भया। लिखितं वृन्दावनेन।

—: इति :—

श्री धातकी-विदेह-भावी जिनवर पूजा

(अडिल्ल छंद)

धातकीखंड महान सुसुंदर जानिये,
बत्तीस क्षेत्र विदेह जहाँ परमानिये;
भावीके भगवान विराजित है तहाँ,
आह्वानन तिन करूं, प्रभु तिष्ठो यहाँ।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्; अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(गझल)

हिमानिका लिया पानी, समानी चंद सीतानी,
दिया धारा जु हित सानी निशानी सौख्य अमलानी;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरी चंदन कदलिनंदन, घसो आताप हरि फंदन,
चढाऊं पद्म जगवंदन, लहौ निर्वाण निर्फंदन;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति-किरण लज भागे,
किधौं जो पुण्य तुम त्यागे, परो यह रस अति जागै;

भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन अति सुमनसे ल्याऊं, सुमनके सुमनसे ध्याऊं,
सु मनमथको हरो पाऊं, निजानंदात्म गुण गाऊं;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अक्षक पक्षको लक्षक, सुभक्षक स्वक्ष क्षुधनक्षक,
धरो नैवेद्य है दक्षक, निकक्षक कर्म चित्तरक्षक;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढाऊं दीप तम नाशै, उडै कज्जल रु परकाशै,
जो आये नाथके पासे, उरघ तत्काल ही जासै;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तगर कृष्णागरु लेऊं, वरंगी वह्निमें खेऊं,
उडै जो धूम्र ईम बेऊं, भगे अघ चरण तुम सेऊं;

भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सु दाडिम नारंगी, अभंगी पुंगी बहु रंगी,
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहे पद अचल निरसंगी;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्य जुत आरती कीने,
हरो आरत कृपाभीने, कटै जंजाल दुख दीने;
भविष्यत धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जिनेश्वर बसो हृदयके माँहि...)

भावी तीरथनाथकी जी महिमा अतुल महान,
सुर-नर-मुनि जिनके सदा जी, प्रणमें निशदिन पाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

द्वीप धातकी खंडमें जी, विदेहधाम सुख खान,
विचरे तीर्थंकर प्रभु जी, करते भवि कल्याण,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य दिवस घडी धन्य है जी, धन्य धन्य अवतार,
भावी जिनवर चरणमें जी, लाग्यो चित्त बडभाग,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य युगल पद होय तब जी, मैं पहुंचुं तुम पास,
धन्य हृदय हो ध्यानतें जी, ध्याऊं निज हित काज,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

दरश करत तव चरणके जी, चक्षु धन्य तब थाय,
सफल करणयुग होत तब जी, वचन सुने जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

पूज करूं तव चरणकी जी, करयुग धनि तब थाय,
शीस धन्य तब ही हुये जी, नमत चरण जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

मैं दुखिया संसारमें जी, तुम करुणानिधि देव,
हरे दुख यह मो तणो जी, करी हों तुम पद सेव,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

स्वरूप तिहारो हृदय विषे जी, धारूं मन वच काय,
भवसागरको भय मिट्यो जी, यातें त्रिभुवन राय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

भावि जिनवर चरणकी जी, भरी भक्ति उर मांहि,
निजस्वरूपमय कीजिये जी, भव संतति-मिट जाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकीखण्डे विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर

भावी मुख्य गणधर पूजा

(गीता)

गणधर बिना खिरती नहीं, है वाणी श्री जिनदेवकी,
बनते हैं वे गणनाथ, जो दीक्षा लहे उन जिन थकी,
जो बीज पदके श्रवणसे, द्वादशांगकी रचना करें,
उन प्रमुख गणधर भावीको, हम पुष्पसे थापन करें।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र अवतर अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा)

निर्मल जलसे कनकझारी भर गुरुके चरण चढाऊँ,
चरण पूजतें गणधरजीके भव समुद्र तिर जाऊँ,
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

अगर चंदन भर भर लाऊँ, शीतल गंध सुरंग भर्यो,
जग उत्तम को करी वंदना आकुल दाह अपार हर्यो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

श्वेत अखंडित अक्षत लेकर, धरूँ पुँज तुम चरणोंमें,
अक्षयपदकी प्राप्ति हेतु मैं, आयो प्रभु तुम चरणोंमें।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

जुही केतकी पुष्प माल ले, चरणा तुमरे मैं ध्याऊँ,
धारत चरण लहे समतासर, मदन शांत मैं कर पाऊँ।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस मिष्ट पकवान सुधासम, ले आयो भर-भर थारी,
परम तृप्तिके हेतु चढाऊँ, क्षुधावेदनी क्षय कारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

शिखा दीपकी जगमग ज्योति, घन अंधियार मिटाती है,
मोह महातम दूर करनको, ज्ञायक ज्योति जगाती है।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगुरु धूपको खेवें, नभमें दशोदिशामें धुम्र उड़े,
दुरित कर्म जल जाएँ हमारे, अष्ट करमकी धूम उडै।

समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल दाडिम केला पिकवल्लभ खारिक मिष्ट अति लायो,
मोक्ष परमपद पावन कारण अति उत्साह सहित आयो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

अष्ट द्रव्यका थाल सजाया, साथमें है भक्ति भारी,
गुरु अर्चना नित-नित करते, वांछित फल सुखकारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

पूर्व विदेही धातुकी, भावीके भगवंत,
उनके गणधर प्रमुख जो, उन्हें नम्हें नित संत।
बारह सभाके नाथ हो द्वादश अंग करतार,
तिनको पूजूँ भक्तिसे भवदधि पार उतार।

(राग : श्री नेमि जिनेश्वरदेव)

नमूं नमूं गणनाथ, सर्व हितंकर हो,
वंदन क्रोड़ो वार, सर्व शुभंकर हो।

श्रीभावी तीर्थेशके, तुम गणधर हो,
धर्म धुरंधर नाथ, ध्वनि तुम झेलत हो।
त्रय गुप्ति, समिति पांच, मदसे रहित ही हो,
सातों भयसे मुक्त, महाव्रतधारी हो।
चौसठ ऋद्धि निधान, आनंद कंदहि हो,
दीप्त तप्त ऋद्धि धार, महा द्युतिवंतहि हो।
अक्षीण महानस ऋद्धि, के प्रभु धारक हो,
अमृतस्रावी ऋद्धि, धारी मुनिवर हो।
अस्ति नास्ति पूर्व-ज्ञानके धारी हो,
चार ज्ञानके धारी, अचरजकारी हो।
धातकी विदेही नाथ, के सुत प्यारे हो,
प्रमुख हो गणनाथ, भवदधि तारे हो।
राजकुंवरके मित्र, थे तुम पूरवमें,
श्रेष्ठीपुत्र देवराज, आए भारतमें।
गुरु का'नका अवतार, भवीके भाग्य अहो,
गाती प्रभु गुणगान, चंपा मात अहो।
धातुकी विदेही देव, के गणनाथ विभो,
मेटो मेरे दुःख, भवदधि तार प्रभो।
चक्षु हुए मुझ धन्य, तुझ दर्शन पायो,
धन्य अहो ! अवतार, तुम ढ़िग मैं आयो।
धन्य मेरी रसना, तुम गुणगान करुँ,
शिवपद मागूं नाथ, अंतर आश धरूं।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महाअर्घं नि०

भावी गणधरदेवकी, भक्ति करें मन लाय,
रिद्धि सिद्धि सब प्राप्त हो, शीघ्र मोक्षसुख पाय।

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

स्वर्णपुरी तीर्थ पूजा

(राग–सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान मंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
तू परमातमा है, ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी ।।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्रावतरत अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, इति सन्निधिकरणम् ।

उज्ज्वल जल शीतल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहान-गुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः फलं० ।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है ।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है ।।

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना ।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा ।।

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी ।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं ।।

विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं ।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं ।।

परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है ।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें ।।

पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है ।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं ।।

स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया ।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया ।।

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी ।
गुरु–वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली ।।

प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है ।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे ।।

जंबूद्वीप रचना न्यारी है, शाश्वत जिन प्रतिमा प्यारी है।
गजदंत, कुलाचल, मेरुगिरि, विजयार्ध, वक्षार सुसुंदर है।।

विदेही सीमंधर युगमंधर, बाहु-सुबाहु जिन सोहे हैं।
भरतैरावतके शाश्वत जिन, सुवर्णपुरीमें पधारे हैं।।

दिव्यमूर्ति बाहुबली जिनकी, अति सुंदर अचरजकारी है।
गुरुकृपासे मेघामृत बरसे, गाजत जय जय जयकारी है।।

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है।।

जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धर-स्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ऐसी मंगलमाल यह, जिन-गुरु-मात प्रताप,
भव-भव पाऊँ साथ तुम, स्वर्ग-मुक्ति दो आप।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घावली

देव-शास्त्र-गुरुनो अर्घ

जल परम उज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरू,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनमके पातक हरुं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंक्ति मचूं,
अरहंत श्रुत--सिद्धांत गुरु--निर्ग्रंथ नित पूजा रचू।

वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवाननो अर्घ

जल फलादिक द्रव्य मिलायके, कनकथाल सु अर्घ बनायके;
निजस्वभाव अरिविधिको हरू रिषभदेव चरण पूजा करूं

ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्रदेवाय चरणकमल पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

महावीर भगवान

जलफल वसु सजि हिम थार, तनमन मोद धरों,
गुण गाउं भवदधि तार पूजत पाप हरों;
श्री वीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोवीस जिनेन्द्रनो अर्घ

जल फल आठो शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों;

चौवीसौं श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधिके वस वसुधा सब ही, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढ़ावे;
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक हमारी।

ॐ ह्रीं स्वर्णपुरे निर्माणाधीन जम्बूद्वीप-बाहुबली जिनायतने प्रतिष्ठेय बाहुबली मुनीन्द्र चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्य भगवाननो अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य--मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करू,
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरू।

ॐ ह्रीं कुंदकुंदादि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री भावि तीर्थंकरनो अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लइ दीप धूप फल अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत शिव मंगलकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत शिव मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप-विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधर अर्घ

(राग-दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों।
अर्हन्त–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा;
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं;
पंच मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेहके;
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी-करावी-भावना भाववी, श्री अर्हन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान-कृत्रिम-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिन-बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत-दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास,-चंपापुर,-पावापुर आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती

आदिनाथ जिन आरती

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
आदिनाथ दरवार लगा आदिनाथ दरबार है।

खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है। आदिनाथ० १

भक्तिसे नृत्य–गान कोई है कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है। आदिनाथ० २

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है। आदिनाथ० ३

चौबीस जिन आरती

अघहर श्री जिनबिंब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिरमें चलो सजन। टेक

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमूं चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत, धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाशवंत है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव--रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण--माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतनका करो जतन। अघ० ४

ॐ जय जिनवरदेवा (आरती)

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ
दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ
आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ

पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ
कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

❀

लाख लाख दीवडानी

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.....(टेक)

लाख लाख द्रव्योंनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय । आंगणिये....लाख० १

लाख लाख द्रव्योंनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय । आंगणिये....लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखों वधामणा जिनवरनां आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय । आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो,
लाखेणा ल्हावा लेवाय । आंगणिये....लाख०३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोंना) उद्धार करनार । आंगणिये....लाख०४
जयकार जगतमां फेलाय । आंगणिये....लाख० ४

❀

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम्;
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः,
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवन् जिनेन्द्रः॥६॥

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥७॥

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा॥८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ॥

(अथेष्ट प्रार्थना–मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥१०॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं;
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु ॥११॥

दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण ॥१२॥

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥४॥

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥५॥

श्री वर्तमान चतुर्विंशती जिनपूजा(हिन्दी)के
प्रकाशनार्थ प्राप्त आर्थिक सहाय

रू. २५०१/-

श्री चेलनाबेन सिद्धार्थभाई तलाटी
श्री अनिष, सिजल, डीम्पल-धीमंत भायाणी, यु.एस.ए., घाटकोपर

रू. २१००/-

ब्र. हर्षाबेन व्रजलाल शाह, जलगांव

रू. १५०१/-

स्व. राजुभाई हसमुखभाई गांधी, ह. उर्मिलाबेन, सोनगढ
श्री उर्मिलाबेन सुरेशभाई देसाई, अमदावाद

रू. ११५१/-

श्री निमित्त, निश्चय, नियति, निहाल शाह, हैदराबाद

रू. ११११/-

श्री गुणवंतराय प्रेमचंद भायाणी, दादर ह. वासंतीबेन भायाणी
श्री सुरेशभाई संघवी, ह. सरलाबेन, सोनगढ
श्री स्नेहाबेन रमेशभाई शाह, जलगांव

रू. ११००/-

श्री विरम जिज्ञेश मोदी, सुरत
श्री ललीताबेन व्रजलाल शाह, जलगांव
श्री लताबेन अनंतराय शाह, जलगांव

रू. १०२६/-

श्री मंगळाबेन प्रभुदास कामदार ह. उषाबेन हर्षदभाई कामदार, सुरत

रू. १०११/-

श्री हेतल जितेनभाई दोशी, ह. महेक और विवान दोशी

रू. १०००/-

श्री ब्र. व्रजलाल गिरधरलाल शाह, वढवाण
श्री सुभाषभाई जैन, खंडवा ह. कुसुमबेन
श्री अनिलकुमार धरमकुमार जैन ह. कुमुदबेन, जबलपुर
ब्र. वीणाबेन, ब्र. सुबोधबेन, सोनगढ
श्री मूलचंदजी तोशी, खंडवा
श्री विमलाबेन शांतिलाल, खंडवा ह. पद्मश्री
श्री रंजनबेन धीरजलाल शाह, बोरीवली
श्री हिंमतलाल छोटालाल झोबालिया, ह. ब्र. जसीबेन, सोनगढ
श्री चंद्राबेन निरंजनजी जैन ह. निक्की उदेपुर
श्री हीराबेन चंदुलाल शाह, अमदावाद
श्री कुसुमबेन नवनीतलाल दोशी, सोनगढ

श्री रेखाबेन किशोरभाई झोबालिया
बोरीवली
ब्र. रंजनबेन धीरजलाल झोबालिया,
सोनगढ
ब्र. निर्मळाबेन और ब्र. लताबेन
श्री प्रदीपभाई मनसुखलाल देसाई
ह. प्रीतिबेन, सुरत
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन
मुमुक्षु मंडल, खंडवा
श्री विमळाबेन साराभाई शाह, सोनगढ
श्री कांताबेन छोटालाल खंधार
ह. सोहम सिद्धेश जैन
श्री मंजुलाबेन धीरजलाल डेलीवाला
ह. अक्षय, कविता, वडोदरा
श्री रूपाबेन सिद्धार्थभाई शाह
ह. निधि निजेश शाह, मुलुंड
श्री गुलाबबेन, शांताबेन, अचरजबेन
ह. ब्र. चन्द्रप्रभाबेन तथा
ब्र. जशीबेन, सोनगढ
ब्र. मीनाबेन, ब्र. सुवर्णाबेन, सोनगढ
श्री शकुंतलाबेन पवनकुमार जैन,
सोनगढ
श्री मधुर, आदर्श, तेजस, सिद्धार्थ,
जयति, प्रियम, तीर्थेश पंचरत्न
परिवार, सोनगढ
श्री अनुभूति दर्शन दोशी, हैदराबाद
श्री मंजुलाबेन तथा ब्र. इलाबेन
नंदलाल महेता, सोनगढ
श्री अनंतराय सी. शाह, अमदावाद
ह. लाभुबेन
श्री तारामती हिंमतलाल शाह, मुंबई
ह. प्रथमेश, विमलेश
श्री गीरधरलाल ठाकरशी मोदी, मलाड
श्री प्रतीति अमरचंद जैन, पंचरत्न
ह. अपूर्व, निजेश, खंडवा
श्री मनीष जैन, उदेपुर

અનુભૂતિ તીર્થ મહાન, સ્વર્ણપુરી સોહે
યહ કહાનગુરુ વરદાન, મંગલ મુક્તિ મિલે.